CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2009 with Solution PDF-Set 2/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 5, 7, 8, 10, 14 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1(क). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: बाज़ार ने, विज्ञापन ने हिन्दी को एक क्रांतिकारी रूप दिया, जिसमें रवानगी है, स्वाद है, रोमांच है, आज की सबसे बड़ी चाहत का अकूत संसार है। इस तरह हिन्दी भविष्य की भाषा, समय का तकाज़ा और रोज़गार की ज़रूरत बनती जा रही है। लोकतंत्र का चौथा स्तंभ पत्रकारिता है। सूचना-क्रांति ने विश्व को ग्राम बना दिया है। मीडिया की जागरूकता ने समाज में एक क्रांति ला दी है और इस क्रांति की भाषा हिन्दी है। इतने सारे समाचार चैनल हैं और सभी चैनलों पर हिन्दी अपने हर रूप में नए कलेवर, तेवर में निखर कर, सँवरकर, लहरकर, 'बोले तो बिंदास' बनकर छाई रहती है। तुलनात्मक अर्थों में आज अंग्रेज़ी-पत्रकारिता से हिन्दी-पत्रकारिता का मूल्य, बाज़ार, उत्पादन, उपभोग और वितरण बहुत बड़ा है। प्रिंट मीडिया की स्थिति ज़्यादा बेहतर है, पत्र-पत्रिकाओं की लाखों प्रतियाँ रोज़ाना बिकती हैं। चीन के बाद सबसे अधिक अख़बार हमारे यहाँ पढ़े जाते हैं, हिन्दी के संप्रेषण की यह मानवीय, रचनात्मक और सारगर्भित उपलब्धि है। पत्र-पत्रिकाएँ हिन्दी की गुणवत्ता और प्रचार-प्रसार के लिए कृतसंकल्प हैं। यह भ्रम फैलाया गया था कि हिन्दी रोज़गारोन्मुखी नहीं है। आज सरकारी, ग़ैर-सरकारी क्षेत्रों में करोड़ों हिन्दी पढ़े-लिखे लोग आजीविका कमा रहे हैं। भविष्य में हिन्दी की बाज़ार-माँग और अधिक होगी। पसीनों में, प्रार्थनाओं में, सिरहानों की सिसकियों में और हमारे सपनों में जब तक हिन्दी रहेगी, तब तक यह बिना किसी पीड़ा या रोग के सप्राण, सवाक् और सस्वर रहेगी। उपर्युक्त अवतरण के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक गद्यांश के केंद्रीय विचार को संक्षेप में व्यक्त करता है।
- इस गद्यांश का केंद्र आधुनिक जीवन में हिन्दी का बढ़ता महत्त्व और उसका उज्ज्वल भविष्य है।

चरण 1: केंद्रीय विचार पहचानें लेखक बाज़ार, विज्ञापन, पत्रकारिता और रोज़गार में हिन्दी की बढ़ती भूमिका बताता है। वह हिन्दी को भविष्य की भाषा कहता है तथा जनजीवन और सपनों से उसके गहरे संबंध पर बल देता है।

चरण 2: शीर्षक का दायरा तय करें केवल पत्रकारिता या केवल रोज़गार का शीर्षक गद्यांश के एक पक्ष तक सीमित रहेगा। उपयुक्त शीर्षक में हिन्दी की वर्तमान प्रगति और उसकी भावी संभावनाएँ दोनों आनी चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है: **हिन्दी का बढ़ता महत्त्व और उज्ज्वल भविष्य**।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय बाज़ार, पत्रकारिता और रोज़गार में बार-बार उभरती हिन्दी की प्रगति को एक सूत्र में बाँधें।

1(ख). लोकतंत्र का चौथा स्तंभ किसे कहा गया है और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश में तथ्य की पहचान के साथ उसका प्रसंगानुसार कारण देना आवश्यक है।
- यहाँ पत्रकारिता की भूमिका को सूचना के प्रसार और समाज में जागरूकता से जोड़ा गया है।

चरण 1: संबंधित कथन पहचानें गद्यांश में स्पष्ट कहा गया है कि 'लोकतंत्र का चौथा स्तंभ पत्रकारिता है।' इसलिए प्रश्न के पहले भाग का उत्तर पत्रकारिता है। समाचार चैनल और पत्र-पत्रिकाएँ इसी व्यापक माध्यम के रूप हैं; केवल किसी एक समाचार चैनल का नाम लिखना पर्याप्त नहीं होगा।

चरण 2: कारण को गद्यांश से जोड़ें लेखक बताता है कि सूचना-क्रांति ने विश्व को ग्राम बना दिया है और मीडिया की जागरूकता ने समाज में क्रांति ला दी है। इससे स्पष्ट है कि पत्रकारिता सूचनाएँ लोगों तक पहुँचाकर उन्हें जागरूक बनाती है। समाज को जानकारी देना और उसमें चेतना उत्पन्न करना उसके महत्त्व को स्थापित करता है। उत्तर में इसी भूमिका को चौथा स्तंभ कहे जाने का आधार बनाना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा गया है, क्योंकि वह सूचनाओं का प्रसार करके लोगों को जागरूक बनाती है और समाज में चेतना तथा परिवर्तन लाती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को दो भागों में रखें: पहले पत्रकारिता का नाम लिखें, फिर सूचना और सामाजिक जागरूकता से उसका महत्त्व स्पष्ट करें।

1(ग). तुलनात्मक दृष्टि से हिन्दी और अंग्रेज़ी पत्रकारिता में लेखक ने किसे व्यापक माना है और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलनात्मक प्रश्न में लेखक का निर्णय और उस निर्णय के आधार दोनों बताने होते हैं।
- इस गद्यांश में पत्रकारिता की व्यापकता का आधार उसका बाज़ार, पहुँच और पाठकीय प्रसार है।

चरण 1: लेखक का तुलनात्मक निर्णय पहचानें लेखक ने अंग्रेज़ी-पत्रकारिता की तुलना में हिन्दी-पत्रकारिता को अधिक व्यापक माना है। उसने स्पष्ट किया है कि हिन्दी-पत्रकारिता का मूल्य, बाज़ार, उत्पादन, उपभोग और वितरण बहुत बड़ा है। यहाँ तुलना भाषाओं की श्रेष्ठता की नहीं, पत्रकारिता के विस्तार और पहुँच की है।

चरण 2: व्यापकता के प्रमाण स्पष्ट करें हिन्दी समाचार चैनलों पर अनेक रूपों और नए तेवरों में छाई हुई है। प्रिंट मीडिया की स्थिति भी बेहतर है और पत्र-पत्रिकाओं की लाखों प्रतियाँ प्रतिदिन बिकती हैं। यह बड़ी पाठक-संख्या और वितरण-क्षेत्र हिन्दी-पत्रकारिता की व्यापकता का समर्थन करते हैं। उत्तर में लेखक द्वारा दिए गए आर्थिक तथा पाठकीय आधार साथ रखने चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक ने हिन्दी-पत्रकारिता को अधिक व्यापक माना है, क्योंकि अंग्रेज़ी-पत्रकारिता की तुलना में उसका मूल्य, बाज़ार, उत्पादन, उपभोग और वितरण बड़ा है तथा उसकी पत्र-पत्रिकाओं की लाखों प्रतियाँ रोज़ बिकती हैं।

त्वरित सुझाव: तुलना का उत्तर लिखते समय अधिक व्यापक भाषा का नाम देकर गद्यांश में गिनाए गए बाज़ार और प्रसार के आधार जोड़ें।

1(घ). हिन्दी पर रोज़गारपरक न होने का आक्षेप क्यों ठीक नहीं है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी आक्षेप का खंडन गद्यांश में उपलब्ध प्रत्यक्ष प्रमाण से किया जाता है।
- रोज़गारपरकता का आशय भाषा के ज्ञान से आजीविका प्राप्त कर सकने से है।

चरण 1: आक्षेप और वास्तविक स्थिति पहचानें हिन्दी के बारे में यह भ्रम फैलाया गया कि वह रोज़गारोन्मुखी नहीं है। लेखक इस धारणा को स्वीकार नहीं करता। वह बताता है कि आज सरकारी और ग़ैर-सरकारी क्षेत्रों में करोड़ों हिन्दी पढ़े-लिखे लोग आजीविका कमा रहे हैं। यह वर्तमान स्थिति उस आक्षेप का सीधा खंडन करती है।

चरण 2: भविष्य की माँग से प्रमाण पूरा करें गद्यांश में बाज़ार, विज्ञापन और पत्रकारिता में हिन्दी का बढ़ता उपयोग दिखाया गया है। लेखक के अनुसार भविष्य में हिन्दी की बाज़ार-माँग और अधिक होगी। इसलिए हिन्दी का रोज़गार से संबंध केवल एक संभावना नहीं है; आज का जीविकोपार्जन उसका प्रमाण है और बढ़ती माँग आगे के अवसरों की ओर संकेत करती है।

चरण 3: निष्कर्ष यह आक्षेप ठीक नहीं है, क्योंकि सरकारी और ग़ैर-सरकारी क्षेत्रों में करोड़ों हिन्दी पढ़े-लिखे लोग आजीविका कमा रहे हैं। बाज़ार में हिन्दी की माँग बढ़ रही है और भविष्य में उसके और बढ़ने की संभावना है।

त्वरित सुझाव: खंडन में पहले करोड़ों लोगों की वर्तमान आजीविका का प्रमाण दें, फिर हिन्दी की बढ़ती बाज़ार-माँग का उल्लेख करें।

1(ङ). बाज़ार ने हिन्दी के स्वरूप को क्या विशेषताएँ दीं जिनसे वह रोज़गार की ज़रूरत बनती जा रही है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में भाषा को मिले गुण और उन गुणों का व्यावहारिक परिणाम बताना है।
- गद्यांश के अनुसार बाज़ार और विज्ञापन ने हिन्दी के रूप को अधिक प्रवाहपूर्ण, आकर्षक और समकालीन बनाया है।

चरण 1: बाज़ार से मिली विशेषताएँ चुनें लेखक के शब्दों में इस हिन्दी में 'रवानगी', 'स्वाद' और 'रोमांच' है। रवानगी से भाषा के सहज प्रवाह का, स्वाद से उसके आकर्षण का और रोमांच से उसमें नए अनुभव की उत्तेजना का बोध होता है। साथ ही उसमें आज की सबसे बड़ी चाहतों का अकूत संसार समाया है।

चरण 2: विशेषताओं को रोज़गार से जोड़ें समकालीन इच्छाओं और रुचियों को व्यक्त करने वाली यह हिन्दी बाज़ार तथा विज्ञापन में उपयोगी बन गई है। उसका नया रूप संप्रेषण को आकर्षक बनाता है और आज के जीवन की आवश्यकताओं से जुड़ता है। इसी संदर्भ में लेखक उसे भविष्य की भाषा, समय का तकाज़ा और रोज़गार की ज़रूरत कहता है। इसलिए गुणों की सूची के बाद उनका यह परिणाम भी लिखना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार और विज्ञापन ने हिन्दी को रवानगी, स्वाद, रोमांच तथा आज की चाहतों को व्यक्त करने की क्षमता दी है। इन गुणों से हिन्दी समकालीन जीवन और बाज़ार की आवश्यकताओं से जुड़कर रोज़गार की ज़रूरत बनती जा रही है।

त्वरित सुझाव: विशेषताओं के लिए रवानगी, स्वाद और रोमांच शब्द चुनें; फिर आज की चाहतों से उनके संबंध का परिणाम बताएँ।

1(च). 'प्रिंट मीडिया' से क्या तात्पर्य है? हिन्दी के लिए उसकी पत्र-पत्रिकाएँ क्या कर रही हैं? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दो भागों वाले प्रश्न में शब्द का अर्थ और उसके संदर्भगत कार्य अलग-अलग स्पष्ट करने चाहिए।
- प्रिंट मीडिया मुद्रित संचार-माध्यम है; हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएँ भाषा के प्रसार का प्रमुख साधन हैं।

चरण 1: प्रिंट मीडिया का अर्थ बताएँ प्रिंट मीडिया से आशय छपे हुए संचार-माध्यमों से है, विशेष रूप से समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं से। गद्यांश में उनकी लाखों प्रतियों की दैनिक बिक्री बताई गई है। इसलिए यहाँ समाचार चैनलों के स्थान पर मुद्रित पत्र-पत्रिकाओं का उल्लेख करना उचित है।

चरण 2: हिन्दी के लिए किए जा रहे कार्य स्पष्ट करें लेखक के अनुसार पत्र-पत्रिकाएँ हिन्दी की गुणवत्ता और प्रचार-प्रसार के लिए कृतसंकल्प हैं। वे हिन्दी में सामग्री पाठकों तक पहुँचाती हैं और भाषा के व्यापक संप्रेषण को संभव बनाती हैं। उनकी बड़ी पाठक-संख्या हिन्दी की पहुँच का प्रमाण है। गुणवत्ता और प्रचार-प्रसार दोनों का उल्लेख करने से प्रश्न का दूसरा भाग पूरा होता है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रिंट मीडिया का अर्थ समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं जैसे मुद्रित संचार-माध्यमों से है। उसकी पत्र-पत्रिकाएँ हिन्दी की गुणवत्ता बनाए रखने और उसके प्रचार-प्रसार के लिए निरंतर कार्य कर रही हैं।

त्वरित सुझाव: पहले मुद्रित माध्यम का अर्थ लिखें; फिर गद्यांश के गुणवत्ता और प्रचार-प्रसार, दोनों प्रमुख कार्यों को शामिल करें।

1(छ). विश्व को ग्राम बना देने का आशय समझाइए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आशय स्पष्ट करते समय प्रतीकात्मक कथन का प्रसंगानुसार अर्थ खोलना चाहिए।
- यहाँ ग्राम निकट संपर्क का प्रतीक है और सूचना-क्रांति उसका कारण है।

चरण 1: कथन का संदर्भ पहचानें गद्यांश में विश्व को ग्राम बनाने का संबंध सूचना-क्रांति से है। इससे भौगोलिक आकार छोटा होने का अर्थ नहीं निकलता; संकेत लोगों के बीच सूचना और संपर्क की बढ़ती सहजता की ओर है।

चरण 2: भाव स्पष्ट करें सूचना के तेज़ प्रसार के कारण दूर देशों की घटनाएँ और समाचार भी लोगों तक शीघ्र पहुँचते हैं। इस संपर्क ने विश्व के लोगों को गाँव के लोगों की तरह निकट ला दिया है।

चरण 3: निष्कर्ष विश्व को ग्राम बना देने का आशय है कि सूचना-क्रांति ने दूरियों का प्रभाव घटाकर संसार के लोगों को तेज़ संचार और सूचना के माध्यम से परस्पर निकट जोड़ दिया है।

त्वरित सुझाव: आशय में सूचना-क्रांति को कारण और विश्व के लोगों के निकट संपर्क को परिणाम के रूप में स्पष्ट करें।

1(ज). 'सरकारी' और 'अतीत' शब्दों के विलोम लिखिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विलोम शब्द वह है जो दिए गए शब्द के विपरीत अर्थ को व्यक्त करता है। विलोम चुनते समय शब्द का मूल अर्थ पहचानना आवश्यक है।
- यहाँ एक शब्द शासन से संबंध बताता है और दूसरा बीते हुए समय का बोध कराता है।

चरण 1: सरकारी का विपरीत अर्थ पहचानें 'सरकारी' का अर्थ सरकार से संबंधित या सरकार के अधीन है। इसके विपरीत 'गैर-सरकारी' का अर्थ सरकार से इतर है। इसलिए इसका उपयुक्त विलोम 'गैर-सरकारी' है।

चरण 2: अतीत का विपरीत काल पहचानें 'अतीत' बीते हुए समय को कहते हैं। उसका विपरीत आने वाला समय है, जिसे 'भविष्य' कहते हैं। 'वर्तमान' अभी का समय बताता है, जबकि यहाँ बीते और आने वाले समय का विरोध अपेक्षित है।

चरण 3: निष्कर्ष सरकारी — गैर-सरकारी; अतीत — भविष्य।

त्वरित सुझाव: पहले शब्द का अर्थ पहचानें: सरकार के संबंध का विरोध गैर-सरकारी से और बीते समय का विरोध भविष्य से व्यक्त करें।

1(झ). निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची बताइए — 'समय' तथा 'प्रार्थना'। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पर्यायवाची शब्द समान या लगभग समान अर्थ व्यक्त करते हैं। उत्तर में दिए गए शब्द के अर्थ से मेल खाने वाला प्रचलित शब्द लिखना चाहिए।
- यहाँ समय के लिए कालबोधक और प्रार्थना के लिए विनम्र निवेदन का अर्थ देने वाला शब्द अपेक्षित है।

चरण 1: समय का समानार्थी चुनें 'समय' का पर्यायवाची 'काल' है। दोनों किसी घटना के होने की अवधि या समय का बोध करा सकते हैं। इसलिए 'समय — काल' एक स्पष्ट और प्रचलित शब्द-युग्म है।

चरण 2: प्रार्थना का समानार्थी चुनें 'प्रार्थना' का अर्थ विनम्रतापूर्वक की गई विनती है। इसलिए इसका पर्यायवाची 'विनती' है। इसमें आग्रह की नम्रता बनी रहती है; आदेश में यही भाव नहीं होता।

चरण 3: निष्कर्ष समय — काल; प्रार्थना — विनती।

त्वरित सुझाव: पर्याय चुनते समय मूल भाव बनाए रखें: समय में काल का और प्रार्थना में विनम्र विनती का भाव है।

1(ञ). 'जागरूकता' एवं 'संप्रेषण' शब्दों में से उपसर्ग और प्रत्यय अलग-अलग कीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपसर्ग मूल शब्द के पहले जुड़ता है, जबकि प्रत्यय शब्द के अंत में जुड़कर नया शब्द बनाता है।
- किसी शब्द का विभाजन करते समय जुड़े अंश का स्थान और उससे बनने वाला अर्थ, दोनों देखना चाहिए।

चरण 1: जागरूकता में प्रत्यय अलग करें 'जागरूकता' का गठन 'जागरूक + ता' से हुआ है। यहाँ 'ता' अंत में जुड़ा प्रत्यय है, जो जागरूक होने की अवस्था या भाव व्यक्त करता है। इस शब्द में पूछा गया अंश प्रत्यय है।

चरण 2: संप्रेषण में उपसर्ग अलग करें 'संप्रेषण' में 'सम्' उपसर्ग है, जिसका रूप यहाँ 'सं' दिखाई देता है। विभाजन 'सम् + प्रेषण' है। उपसर्ग शब्द के आरंभ में जुड़ा है; इसे शब्द के अंत में लगने वाला प्रत्यय नहीं कहा जाएगा।

चरण 3: निष्कर्ष जागरूकता: जागरूक + ता; प्रत्यय — ता। संप्रेषण: सम् + प्रेषण; उपसर्ग — सम् (सं)।

त्वरित सुझाव: जागरूकता के अंत का 'ता' प्रत्यय है; संप्रेषण के आरंभ का 'सं' उपसर्ग सम् का रूप है।

2(क). निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर उस पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: कुछ लिखके सो, कुछ पढ़के सो तू जिस जगह जागा सवेरे उस जगह से बढ़के सो! जैसा उठा वैसा गिरा जाकर बिछौने पर, तिफ़्ल जैसा प्यार यह जीवन-खिलौने पर, बिना समझे, बिना बूझे खेलते जाना, एक ज़िद को जकड़ लेकर ठेलते जाना, ग़लत है, बेसूद है, कुछ रचके सो, कुछ गढ़के सो तू जिस जगह जागा सवेरे उस जगह से बढ़के सो! दिन-भर इबारत पेड़, पत्ती और पानी की, बंद घर की, खुले-फैले खेत धानी की, हवा की बरसात की हर ख़ुश्क की, तर की, गुज़रती दिन भर रही जो आपकी, पर की, उस इबारत के सुनहरे वर्क़ से मन मढ़के सो तू जिस जगह जागा सवेरे उस जगह से बढ़के सो! लिखा सूरज ने किरन की कलम लेकर जो, नाम लेकर जिसे पंछी ने पुकारा वो, हवा जो कुछ गा गई, बरसात जो बरसी, जो इबारत लहर बनकर नदी पर बरसी, उस इबारत की अगरचे सीढ़ियाँ हैं, चढ़के सो तू जिस जगह जागा सवेरे उस जगह से बढ़के सो! सोने से पहले क्या कर लेना चाहिए? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में कवि प्रत्येक दिन पढ़ने, लिखने और सृजन करने की प्रेरणा देता है।
- उत्तर के मुख्य संकेत आरंभ की पंक्ति 'कुछ लिखके सो, कुछ पढ़के सो' और आगे आए 'कुछ रचके सो, कुछ गढ़के सो' हैं।

चरण 1: कवि के प्रत्यक्ष निर्देश पहचानें कवि कहता है कि सोने से पहले कुछ पढ़ और लिख लेना चाहिए। 'कुछ रचके सो, कुछ गढ़के सो' से वह रचनात्मक कार्य करने का भी निर्देश देता है। इसलिए केवल दिन बिताना पर्याप्त नहीं है।

चरण 2: निर्देश का उद्देश्य समझें 'उस जगह से बढ़के सो' बताता है कि इन कार्यों से ज्ञान और अनुभव में वृद्धि होनी चाहिए। दिन के अंत में व्यक्ति सुबह की अपेक्षा कुछ अधिक सीखा हुआ और आगे बढ़ा हुआ हो।

चरण 3: निष्कर्ष सोने से पहले कुछ पढ़ना-लिखना, कुछ नया रचना और सीखकर सुबह की अपेक्षा आगे बढ़ लेना चाहिए।

त्वरित सुझाव: इस उत्तर में कविता की क्रियाएँ पकड़ें: लिखना, पढ़ना, रचना और गढ़ना; इन सबका लक्ष्य प्रतिदिन आगे बढ़ना है।

2(ख). कवि ने किसे 'ग़लत' और 'बेसूद' कहा है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि जीवन को समझ-बूझ और रचनात्मक प्रगति के साथ जीने का समर्थन करता है। उसके अनुसार केवल आदतन दिन काटना जीवन का सार्थक उपयोग नहीं है।
- 'ग़लत' और 'बेसूद' शब्दों का संबंध उनसे पहले कही गई गतिविधियों से है। 'बेसूद' का अर्थ लाभ या सार्थक फल से रहित है।

चरण 1: निषेध से पहले की पंक्तियाँ पहचानें कवि ने 'बिना समझे, बिना बूझे खेलते जाना' और 'एक ज़िद को जकड़ लेकर ठेलते जाना' कहा है। इसका आशय है कि व्यक्ति जीवन को खिलौना मानकर, उसके उद्देश्य को समझे बिना, केवल अपनी ज़िद के सहारे चलता रहे। ऐसी गतिविधि में विचार और सीखने की प्रवृत्ति नहीं है।

चरण 2: निरर्थकता का कारण स्पष्ट करें 'जैसा उठा वैसा गिरा जाकर बिछौने पर' भी उसी निष्क्रिय जीवनचर्या की ओर संकेत करता है। दिन भर में न कोई नई समझ विकसित हुई, न कोई सार्थक रचना हुई। इसलिए कवि इस तरह दिन बिताने और बिना सोचे-समझे ज़िद पर अड़े रहने को ग़लत तथा बेकार बताता है। इसके स्थान पर वह पढ़ने, लिखने और आगे बढ़ने को कहता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने जीवन को खिलौना समझकर बिना समझे-बूझे खेलते रहने, एक ज़िद पकड़े उसे चलाते रहने और बिना किसी प्रगति के दिन बिताने को 'ग़लत' तथा 'बेसूद' कहा है।

त्वरित सुझाव: 'ग़लत है, बेसूद है' से ठीक पहले की पंक्तियाँ पढ़ें; उत्तर में बिना समझे खेलना और ज़िद को पकड़े रहना स्पष्ट लिखें।

2(ग). प्रकृति का लेख लिखने में किस-किसका योगदान है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि प्रकृति की विविध गतिविधियों को एक इबारत या लेख के रूप में देखता है। इस लेख में प्रकृति के कई तत्त्व भाग लेते हैं।
- सूरज की किरण, पक्षी का स्वर, हवा, बरसात और नदी की लहर से संबंधित पंक्तियाँ उत्तर का आधार हैं।

चरण 1: प्रकाश और स्वर का योगदान देखें सूरज किरणों की कलम लेकर लिखता है और पक्षी अपने स्वर में पुकारता है। इस प्रकार सूरज, उसकी किरणें और पक्षी प्रकृति की अभिव्यक्ति में योगदान देते हैं।

चरण 2: अन्य प्राकृतिक तत्त्व पहचानें हवा का गाना, वर्षा का बरसना और नदी पर लहरों का बनना भी इस लेख का हिस्सा है। पेड़-पत्तियाँ, पानी और हरे खेत दिन भर पढ़ी जाने वाली इसी प्राकृतिक इबारत को समृद्ध करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष प्रकृति का लेख लिखने में सूर्य और उसकी किरणों, पक्षियों, हवा, वर्षा तथा नदी की लहरों का योगदान है; पेड़-पत्तियाँ, पानी और हरे खेत भी उसकी इबारत का हिस्सा हैं।

त्वरित सुझाव: अंतिम पद में आए सूर्य, किरण, पक्षी, हवा, बरसात और नदी को क्रम से पहचानकर योगदान देने वाले तत्त्व लिखें।

2(घ). आशय स्पष्ट कीजिए — जिस जगह जागा सवेरे उस जगह से बढ़के सो! [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में 'आगे बढ़ना' ज्ञान, अनुभव और रचनात्मक क्षमता में प्रगति करने का प्रतीक है।
- पंक्ति का आशय उसके संदर्भ से खुलता है: कवि पढ़ने, लिखने, रचने और प्रकृति से सीखने की प्रेरणा देता है।

चरण 1: जगह का प्रतीकात्मक अर्थ समझें यहाँ 'जिस जगह जागा' से सुबह की मानसिक और बौद्धिक स्थिति का संकेत है। कवि केवल रहने या सोने की जगह बदलने को नहीं कहता; वह दिन भर कुछ सीखने पर बल देता है।

चरण 2: बढ़ने का अभिप्राय स्पष्ट करें मनुष्य को दिन भर के अनुभवों और प्रकृति से सीखकर अपने ज्ञान तथा समझ में वृद्धि करनी चाहिए। सोते समय वह सुबह की अपेक्षा अधिक अनुभवी हो और कुछ सार्थक कार्य कर चुका हो।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का आशय है कि प्रत्येक दिन कुछ नया सीखकर और रचनात्मक कार्य करके अपनी योग्यता बढ़ानी चाहिए, ताकि दिन के अंत में हम सुबह की अपेक्षा आगे बढ़े हों।

त्वरित सुझाव: आशय लिखते समय 'जगह' को मानसिक स्थिति और 'बढ़ना' को सीखने तथा आत्मविकास से जोड़ें।

3. निम्नलिखित विषयों में से एक पर निबंध लिखिए: (क) भारत का एक अतीत भी है और भविष्य भी (ख) युवा पीढ़ी और देश का भविष्य (ग) हम खेलों में पिछड़े क्यों हैं (घ) मीडिया का सामाजिक दायित्व [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का स्पष्ट परिचय, क्रमबद्ध विवेचन और सार्थक उपसंहार होता है। भाषा सहज, विचार मौलिक और उदाहरण विषय से संबंधित होने चाहिए।
- सामाजिक विषय पर केवल समस्या गिनाना पर्याप्त नहीं है; कारण, प्रभाव और व्यावहारिक समाधान भी प्रस्तुत करने चाहिए। नीचे अभ्यास के लिए चारों विषयों के नमूना निबंध दिए गए हैं।

चरण 1: विषयों की रूपरेखा बनाइए पहले विषय में भारत की विरासत, वर्तमान चुनौतियों और भविष्य के निर्माण को जोड़ें। दूसरे में युवाओं की शक्ति, उनके सामने आने वाली बाधाओं और उनके कर्तव्यों को रखें। तीसरे में खेलों की स्थिति के कारण और सुधार के उपाय लिखें। चौथे में सूचना, जनचेतना और मीडिया की जवाबदेही पर विचार करें। प्रत्येक निबंध का अपना शीर्षक, आरंभ, विचार-विस्तार और समापन हो। परीक्षा में निर्देशानुसार किसी एक विषय का चयन करना है।

चरण 2: विषय (क) का नमूना निबंध पढ़िए **भारत का एक अतीत भी है और भविष्य भी**

भारत केवल एक भौगोलिक क्षेत्र नहीं, बल्कि अनेक भाषाओं, परंपराओं और विचारधाराओं से बनी जीवंत सभ्यता है। उसका अतीत ज्ञान, कला और मानवीय मूल्यों की समृद्ध विरासत प्रस्तुत करता है। दर्शन, गणित, साहित्य और स्थापत्य में हमारे पूर्वजों ने उल्लेखनीय योगदान दिए। विविधता में साथ रहने की भावना इस विरासत की विशेष पहचान है।

किंतु अतीत का गौरव हमें आत्मसंतोष में नहीं डुबोना चाहिए। हमारे इतिहास में सामाजिक भेदभाव और रूढ़ियों जैसी कमजोरियाँ भी रही हैं। इतिहास से सीखने का अर्थ उसकी उपलब्धियों को अपनाना और उसकी भूलों को सुधारना है। स्वतंत्रता-संग्राम ने हमें त्याग, एकता और स्वाभिमान की प्रेरणा दी। लोकतंत्र ने नागरिकों को देश के निर्माण में भाग लेने का अवसर प्रदान किया।

भारत का भविष्य इस बात पर निर्भर है कि हम शिक्षा, वैज्ञानिक दृष्टि और सामाजिक न्याय को कितना महत्त्व देते हैं। प्रत्येक बच्चे को अच्छी शिक्षा मिले, युवाओं को सम्मानजनक काम मिले और महिलाओं को समान अवसर मिलें। गाँवों और नगरों का संतुलित विकास हो तथा प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग किया जाए। नागरिक अपने अधिकारों के साथ कर्तव्यों को भी समझें।

हमें परंपरा और प्रगति के बीच सार्थक संबंध बनाना होगा। अतीत दिशा दे सकता है, पर भविष्य वर्तमान के परिश्रम से बनेगा। अपनी विरासत से प्रेरित और नई चुनौतियों के प्रति जागरूक भारत ही समृद्ध, न्यायपूर्ण तथा मानवीय राष्ट्र बन सकता है।

चरण 3: विषय (ख) का नमूना निबंध पढ़िए **युवा पीढ़ी और देश का भविष्य**

किसी देश का भविष्य केवल उसके प्राकृतिक संसाधनों से तय नहीं होता। उसे आकार देने में वहाँ की युवा पीढ़ी की निर्णायक भूमिका होती है। युवाओं में उत्साह, साहस और नई परिस्थितियों के अनुकूल सीखने की क्षमता होती है। सही मार्गदर्शन मिलने पर यही शक्ति राष्ट्र के विकास का आधार बनती है।

युवा वैज्ञानिक खोज, खेती, उद्योग, शिक्षा, खेल और कला, सभी क्षेत्रों में योगदान दे सकते हैं। वे नई तकनीक अपनाकर उत्पादन बढ़ा सकते हैं और सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती देकर समानता का वातावरण बना सकते हैं। स्वच्छता, साक्षरता तथा पर्यावरण-संरक्षण जैसे

कार्यों में उनकी भागीदारी समाज को प्रत्यक्ष लाभ पहुँचाती है।

फिर भी केवल युवाओं से बड़ी अपेक्षाएँ करना पर्याप्त नहीं है। बेरोजगारी, शिक्षा में असमानता और कौशल-प्रशिक्षण की कमी उनके रास्ते में बाधा बनती हैं। परिवार, शिक्षण-संस्थाओं और सरकार को उनकी प्रतिभा विकसित करने के अवसर देने चाहिए। शिक्षा का संबंध जीवनोपयोगी कौशल और नैतिक मूल्यों से जोड़ना आवश्यक है। खेल, पुस्तकालय और रचनात्मक गतिविधियाँ भी उनके संतुलित विकास में सहायक हैं।

युवाओं का कर्तव्य है कि वे अनुशासन, परिश्रम और संवेदनशीलता अपनाएँ। नशे, हिंसा और भेदभाव से दूर रहकर वे विवेकपूर्ण नागरिक बनें। सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा और जरूरतमंदों की सहायता भी देशसेवा है। जब युवाओं को अवसर मिलेंगे और वे जिम्मेदारी से उनका उपयोग करेंगे, तब देश का भविष्य अधिक सुरक्षित, समृद्ध और आशापूर्ण होगा।

चरण 4: विषय (ग) का नमूना निबंध पढ़िए **हम खेलों में पिछड़े क्यों हैं**

खेल शरीर को स्वस्थ रखने के साथ अनुशासन, सहयोग और संघर्षशीलता सिखाते हैं। हमारे देश में प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की कमी नहीं है, फिर भी अनेक खेलों में हमारी उपलब्धियाँ संभावनाओं के अनुरूप नहीं हैं। इस स्थिति को समझने के लिए खिलाड़ियों को दोष देने के बजाय उनके आसपास की व्यवस्था पर विचार करना चाहिए।

एक प्रमुख कारण खेलों के प्रति उपेक्षापूर्ण दृष्टि है। कई परिवार पढ़ाई और खेल को एक-दूसरे का विरोधी मानते हैं। विद्यालयों में पर्याप्त मैदान, उपकरण और प्रशिक्षित शिक्षक नहीं मिलते। ग्रामीण प्रतिभाएँ प्रतियोगिताओं तक पहुँच ही नहीं पातीं। आर्थिक कठिनाइयों के कारण कई खिलाड़ी पौष्टिक भोजन, प्रशिक्षण और यात्रा का खर्च नहीं उठा पाते।

दूसरी बाधा अवसरों और संसाधनों का असमान वितरण है। कुछ लोकप्रिय खेलों को अधिक प्रचार और सहायता मिलती है, जबकि अन्य खेल उपेक्षित रहते हैं। चयन में पक्षपात, प्रशासनिक अव्यवस्था और निरंतर प्रशिक्षण का अभाव भी प्रतिभा को कमजोर करते हैं। केवल प्रतियोगिता के समय उत्साह दिखाने से विश्वस्तरीय खिलाड़ी तैयार नहीं होते।

सुधार के लिए विद्यालय स्तर से खेल-संस्कृति विकसित करनी होगी। स्थानीय मैदान सुरक्षित हों, प्रशिक्षक उपलब्ध हों और प्रतिभा का निष्पक्ष चयन किया जाए। खिलाड़ियों को छात्रवृत्ति, पोषण, चिकित्सा तथा भविष्य की सुरक्षा मिले। अभिभावक खेलों को समय की बरबादी न समझें। सुनियोजित प्रयास और खिलाड़ियों के सम्मान से ही हमारी प्रतिभा उपलब्धियों में बदलेगी।

चरण 5: विषय (घ) का नमूना निबंध पढ़िए **मीडिया का सामाजिक दायित्व**

समाचार-पत्र, रेडियो और टेलीविजन समाज को सूचनाएँ देने तथा जनमत बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मीडिया जनता और शासन के बीच संवाद का माध्यम है। उसके द्वारा प्रस्तुत समाचार लोगों की समझ और निर्णयों को प्रभावित करते हैं। इसलिए उसकी स्वतंत्रता के साथ सामाजिक जिम्मेदारी भी जुड़ी हुई है।

मीडिया का पहला दायित्व सत्यापित और संतुलित सूचना देना है। समाचार प्रकाशित करने की जल्दी में अफवाह को तथ्य नहीं बनाना चाहिए। किसी विवाद में संबंधित पक्षों की बात सुनना और भूल होने पर सुधार करना विश्वसनीयता की बुनियाद है। समाचार, विचार और विज्ञापन के बीच स्पष्ट अंतर भी आवश्यक है।

मीडिया को समाज के कमजोर वर्गों की समस्याएँ सामने लानी चाहिए। शिक्षा, स्वास्थ्य, खेती, श्रमिकों और पर्यावरण से जुड़े प्रश्न केवल मनोरंजन से कम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। भ्रष्टाचार और अन्याय की जाँच करके वह सत्ता को जवाबदेह बना सकता है। संकट के समय उपयोगी जानकारी देकर वह जनहित की रक्षा भी करता है।

सनसनी, भड़काऊ भाषा और निजी जीवन में अनावश्यक हस्तक्षेप इस भूमिका को कमजोर करते हैं। बच्चों तथा पीड़ित व्यक्तियों की गरिमा और पहचान की रक्षा होनी चाहिए। व्यावसायिक लाभ के लिए सामाजिक सद्भाव को चोट पहुँचाना अनुचित है। जिम्मेदार मीडिया निर्भीक होकर प्रश्न पूछता है, पर प्रमाण और संवेदनशीलता का साथ नहीं छोड़ता। ऐसा मीडिया लोकतंत्र को अधिक जागरूक और मानवीय बनाता है।

चरण 6: निष्कर्ष चारों विषयों में विचारों का तार्किक क्रम और आशावादी, व्यावहारिक दृष्टि आवश्यक है। भारत का भविष्य विरासत से प्रेरणा, युवाओं की जिम्मेदार भागीदारी, खेलों के लिए समान अवसर और जवाबदेह मीडिया से सुदृढ़ बनता है।

त्वरित सुझाव: चुने हुए विषय के लिए पहले परिचय, तीन मुख्य विचार और समापन लिख लें। हर समस्या के साथ एक ठोस उपाय जोड़ें और केवल नारे लिखने से बचें।

4. स्कूल जाने की उम्र में बच्चों को काम करते, और भीख माँगते, देखकर आपको कैसा लगता है? अपने विचारों को किसी प्रतिष्ठित दैनिक के संपादक के नाम पत्र के रूप में लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को पत्र किसी सार्वजनिक समस्या की ओर समाज और संबंधित अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करता है। इसकी भाषा विनम्र, स्पष्ट और तर्कपूर्ण होती है।
- इस पत्र में बच्चों को काम करते और भीख माँगते देखकर उत्पन्न संवेदना के साथ समस्या के कारण, उनके जीवन पर पड़ने वाला प्रभाव तथा व्यावहारिक उपाय प्रस्तुत करने हैं।

चरण 1: पत्र का प्रारूप और विषयवस्तु तय कीजिए क्रम रखें: प्रेषक का पता, दिनांक, संपादक और समाचार-पत्र का पता, विषय, संबोधन, मुख्य कथ्य, समापन तथा नाम। मुख्य कथ्य में पहले बच्चों की दशा देखकर अपनी पीड़ा व्यक्त करें। फिर शिक्षा और खेल से वंचित रहने का प्रभाव बताएँ। अंत में परिवारों की सहायता, बच्चों के पुनर्वास और विद्यालय से जोड़ने के उपाय सुझाएँ। बच्चों को दोष देने के बजाय उनकी परिस्थितियों के प्रति संवेदनशील रहें।

चरण 2: पूर्ण नमूना पत्र लिखिए 24, शांति विहार
दिल्ली
28 मार्च, 2009
सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक हिंदुस्तान,
नई दिल्ली।

विषय: श्रम और भिक्षावृत्ति में उलझे बच्चों की शिक्षा एवं पुनर्वास के संबंध में।

महोदय,

आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के माध्यम से मैं समाज और प्रशासन का ध्यान उन बच्चों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ, जो स्कूल जाने की उम्र में काम करने अथवा भीख माँगने को विवश हैं। चौराहों पर हाथ फैलाते, ढाबों पर बर्तन धोते और कूड़ा बीनते बच्चों को देखकर मन दुख और चिंता से भर उठता है। जिन हाथों में पुस्तकें और खिलौने होने चाहिए, वे जीवन की कठिनाइयों का बोझ उठा रहे हैं।

गरीबी, परिवार की असुरक्षित आय और शिक्षा के अवसरों से दूरी इस समस्या को बढ़ाते हैं। कई बच्चे शोषण का शिकार भी होते हैं। श्रम और भिक्षावृत्ति में फँसकर उनका स्वास्थ्य बिगड़ता है, आत्मविश्वास घटता है और वे पढ़ाई तथा खेल से वंचित रह जाते हैं। केवल दया दिखाकर कुछ पैसे दे देना उनकी स्थिति का स्थायी समाधान नहीं है।

प्रशासन ऐसे बच्चों की पहचान कर उन्हें सुरक्षित वातावरण, शिक्षा और आवश्यक सहायता उपलब्ध कराए। जरूरतमंद परिवारों को रोजगार तथा सहयोग मिले, ताकि बच्चे फिर उसी परिस्थिति में न लौटें। विद्यालयों में प्रवेश के साथ नियमित उपस्थिति और पढ़ाई में सहायता सुनिश्चित की जाए। नागरिक बच्चों से काम न कराएँ और उनके शोषण की जानकारी संबंधित अधिकारियों तक पहुँचाएँ।

कृपया इस विषय पर समाचार और विचार प्रकाशित कर जनजागरण कीजिए। प्रत्येक बच्चे को सुरक्षित बचपन और पढ़ने का अवसर दिलाना हम सबकी साझा जिम्मेदारी है।

धन्यवाद।

भवदीय,
अमित कुमार

चरण 3: निष्कर्ष पत्र में बच्चों की स्थिति पर दुःख और चिंता व्यक्त करते हुए शिक्षा, सुरक्षा, पारिवारिक सहायता तथा पुनर्वास की माँग की गई है। संपादक से जनजागरण का अनुरोध औपचारिक और विनम्र ढंग से किया गया है।

त्वरित सुझाव: संपादक को पत्र में अपनी संवेदना के बाद समस्या का सामाजिक प्रभाव और ठोस उपाय अवश्य दें। विषय-पंक्ति संक्षिप्त रखें और अंत में समाचार-पत्र से स्पष्ट अनुरोध करें।

अथवा

4. अथवा अपने किसी प्रिय टी.वी. कार्यक्रम की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए उस चैनल विशेष के कार्यक्रम अधिकारी को एक पत्र लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कार्यक्रम अधिकारी को लिखा गया पत्र औपचारिक होता है। इसमें प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन, मुख्य कथ्य और समापन का क्रम रखा जाता है।
- प्रशंसात्मक पत्र में कार्यक्रम और चैनल का स्पष्ट नाम तथा उसकी ठोस विशेषताएँ लिखनी चाहिए। भाषा विनम्र हो और प्रत्येक विशेषता के साथ दर्शकों को होने वाला लाभ स्पष्ट हो।

चरण 1: पत्र का प्रारूप निर्धारित करें यहाँ दूरदर्शन के कार्यक्रम 'कृषि दर्शन' को प्रिय कार्यक्रम के रूप में चुना गया है। पत्र कार्यक्रम अधिकारी को संबोधित होगा। विषय में कार्यक्रम की उपयोगिता का उल्लेख करेंगे। मुख्य भाग में कृषि संबंधी जानकारी, विशेषज्ञों की सलाह, सरल प्रस्तुति और ग्रामीण जीवन से उसके संबंध को स्पष्ट करेंगे।

चरण 2: कथ्य की योजना बनाएँ पत्र का आरंभ नियमित दर्शक के रूप में अपना परिचय देकर करेंगे। इसके बाद बताएँगे कि खेती की समस्याओं पर चर्चा और आधुनिक कृषि पद्धतियों की जानकारी कार्यक्रम को उपयोगी बनाती है। अंत में कार्यक्रम की सराहना करते हुए दर्शकों के प्रश्नों को अधिक स्थान देने का सुझाव देंगे। केवल 'कार्यक्रम अच्छा है' कहने के स्थान पर उसकी विशिष्ट खूबियों का उल्लेख करेंगे।

चरण 3: पूरा आदर्श पत्र लिखें 24, विकास नगर
नई दिल्ली
दिनांक: 20 मार्च, 2009
सेवा में,
कार्यक्रम अधिकारी
दूरदर्शन केंद्र
नई दिल्ली

विषय: 'कृषि दर्शन' कार्यक्रम की विशेषताओं के संबंध में।

महोदय,

मैं आपके चैनल पर प्रसारित 'कृषि दर्शन' कार्यक्रम का नियमित दर्शक हूँ। यह मेरा प्रिय कार्यक्रम है, क्योंकि इसमें मनोरंजन के साथ उपयोगी जानकारी भी मिलती है और खेती तथा ग्रामीण जीवन के प्रति हमारी समझ बढ़ती है।

कार्यक्रम में किसानों की समस्याओं पर चर्चा तथा कृषि विशेषज्ञों की सलाह विशेष रूप से उपयोगी लगती है। अच्छी फसल के लिए मिट्टी, बीज, सिंचाई और फसलों की देखभाल संबंधी जानकारी सरल भाषा में समझाई जाती है। खेती की विभिन्न विधियों का दृश्य प्रदर्शन विषय को अधिक स्पष्ट बना देता है। इससे दर्शकों को केवल सुनकर ही नहीं, देखकर भी सीखने का अवसर मिलता है।

कार्यक्रम की सहज प्रस्तुति और किसानों के अनुभव उसे रोचक बनाते हैं। पशुपालन तथा ग्रामीण आजीविका से जुड़ी जानकारी भी इसकी उपयोगिता बढ़ाती है। विद्यार्थियों को इससे किसानों के परिश्रम और कृषि के महत्त्व को समझने का अवसर मिलता है।

मेरा सुझाव है कि किसानों द्वारा भेजे गए प्रश्नों और उनके समाधान को अधिक स्थान दिया जाए। इस ज्ञानवर्धक कार्यक्रम के लिए आपको और आपकी पूरी टीम को हार्दिक बधाई। आशा है, इसकी उपयोगिता निरंतर बढ़ती रहेगी।

धन्यवाद।

भवदीय
अमन कुमार

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में प्रिय कार्यक्रम 'कृषि दर्शन' की सरल भाषा, विशेषज्ञों की सलाह, दृश्य प्रदर्शन और ग्रामीण जीवन से संबंधित उपयोगी जानकारी का उल्लेख करते हुए कार्यक्रम अधिकारी को प्रशंसा तथा सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

त्वरित सुझाव: विषय में कार्यक्रम का नाम लिखें और मुख्य भाग में कम से कम दो ठोस विशेषताओं को दर्शकों के लाभ से जोड़ें; पत्र का औपचारिक समापन अवश्य करें।

5(क)(i). निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए: स्तंभ-लेखन का क्या तात्पर्य है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्तंभ समाचारपत्र या पत्रिका का वह निश्चित स्थान है जहाँ किसी लेखक के विचार नियमित रूप से प्रकाशित होते हैं।
- स्तंभ-लेखन में विषय की जानकारी के साथ लेखक की निजी दृष्टि और विशिष्ट शैली भी महत्त्वपूर्ण होती है।

चरण 1: नियमितता पहचानें समाचारपत्र या पत्रिका किसी विषय अथवा विचार-श्रृंखला के लिए निश्चित स्तंभ निर्धारित करती है। उसमें लेखक का लेख नियमित अंतराल पर प्रकाशित होता है।

चरण 2: लेखन का स्वरूप स्पष्ट करें लेखक सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि विषयों पर अपनी समझ और विचार प्रस्तुत करता है। केवल किसी घटना की सूचना देना इसका उद्देश्य नहीं होता; उसकी व्याख्या तथा लेखक की दृष्टि भी सामने आती है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचारपत्र या पत्रिका में किसी निश्चित स्थान पर नियमित रूप से किसी लेखक द्वारा विचारपूर्ण लेख लिखना स्तंभ-लेखन कहलाता है।

त्वरित सुझाव: स्तंभ-लेखन की परिभाषा में 'निश्चित स्थान', 'नियमित लेखन' और 'लेखक के विचार' को जोड़कर संक्षिप्त उत्तर लिखें।

5(क)(ii). अंशकालिक संवाददाता किसे कहा जाता है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संवाददाता समाचार संस्था के लिए सूचनाएँ जुटाकर समाचार भेजता है।
- अंशकालिक संवाददाता पूर्णकालिक नौकरी के रूप में संस्था से नहीं जुड़ा होता; वह आवश्यकता के अनुसार समाचार उपलब्ध कराता है।

चरण 1: सेवा की प्रकृति पहचानें अंशकालिक संवाददाता किसी समाचार संगठन के लिए आंशिक समय काम करता है। उसे पूर्णकालिक संवाददाता की तरह नियमित रूप से पूरा कार्य-समय संस्था को नहीं देना होता।

चरण 2: पारिश्रमिक का आधार समझें वह अपने क्षेत्र की खबरें समाचारपत्र या चैनल को भेजता है। सामान्यतः उसे भेजे गए समाचारों अथवा किए गए काम के आधार पर पारिश्रमिक मिलता है। पत्रकारिता की भाषा में ऐसे संवाददाता को स्ट्रिंगर भी कहा जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष जो संवाददाता किसी समाचार संस्था के लिए अंशकालिक रूप से खबरें भेजता है और काम के अनुसार पारिश्रमिक पाता है, उसे अंशकालिक संवाददाता या स्ट्रिंगर कहते हैं।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में आंशिक समय की सेवा और काम के अनुसार पारिश्रमिक को जोड़ें; इसे पूर्णकालिक वेतनभोगी संवाददाता न लिखें।

5(क)(iii). 'एंकर बाइट' से आप क्या समझते हैं? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- टेलीविजन समाचारों में एंकर स्टूडियो से समाचार प्रस्तुत करता है।
- बाइट समाचार से संबंधित व्यक्ति के रिकॉर्ड किए गए कथन का संक्षिप्त अंश होता है, जिसे उसकी अपनी आवाज़ में सुनाया जाता है।

चरण 1: एंकर की भूमिका स्पष्ट करें एंकर पहले समाचार का परिचय देता है या उससे जुड़ी मुख्य जानकारी बताता है। इससे दर्शक घटना और आगे सुनाए जाने वाले कथन का संदर्भ समझ पाते हैं।

चरण 2: बाइट का प्रयोग समझें इसके बाद समाचार से संबंधित किसी व्यक्ति का रिकॉर्ड किया हुआ बयान अथवा प्रतिक्रिया दिखाई-सुनाई जाती है। इस कथन से समाचार को प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया और विश्वसनीयता मिलती है। यहाँ बाइट संबंधित व्यक्ति की होती है, केवल एंकर की अपनी टिप्पणी नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष जब एंकर समाचार की जानकारी देने के बाद उससे संबंधित व्यक्ति का रिकॉर्ड किया हुआ कथन या प्रतिक्रिया दिखाता-सुनाता है, तो समाचार-प्रस्तुति के इस रूप को 'एंकर बाइट' कहते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में क्रम स्पष्ट रखें: पहले एंकर द्वारा समाचार का परिचय, फिर संबंधित व्यक्ति की रिकॉर्ड की गई प्रतिक्रिया।

5(क)(iv). पत्रकारिता में 'बीट' किसे कहा जाता है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार संस्थाएँ संवाददाताओं के बीच समाचार-संकलन का कार्य बाँटती हैं।
- किसी संवाददाता को नियमित कवरेज के लिए सौंपा गया विशिष्ट विषय या क्षेत्र उसकी बीट होता है।

चरण 1: कार्य-विभाजन समझें एक संवाददाता को शिक्षा, अपराध, राजनीति, खेल या न्यायालय जैसे किसी निश्चित क्षेत्र की खबरें जुटाने की जिम्मेदारी दी जा सकती है। इस निर्धारित जिम्मेदारी को उसकी बीट कहते हैं।

चरण 2: नियमित कवरेज का महत्त्व बताएँ संवाददाता अपनी बीट से जुड़े घटनाक्रमों पर लगातार नजर रखता है और संबंधित स्रोतों से संपर्क बनाए रखता है। उदाहरण के लिए शिक्षा की बीट संभालने वाला संवाददाता विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और शिक्षा-नीतियों की खबरें जुटाता है।

चरण 3: निष्कर्ष पत्रकारिता में संवाददाता को समाचार-संकलन और नियमित रिपोर्टिंग के लिए सौंपा गया विशिष्ट विषय या क्षेत्र 'बीट' कहलाता है।

त्वरित सुझाव: बीट की परिभाषा के साथ शिक्षा या अपराध का छोटा उदाहरण दें; इसे किसी एक समाचार के शीर्षक का नाम न समझें।

5(क)(v). संपादकीय में संपादक/लेखक का नाम क्यों नहीं दिया जाता है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादकीय किसी महत्त्वपूर्ण विषय पर समाचारपत्र की संस्थागत राय प्रस्तुत करता है।
- इसकी जिम्मेदारी समाचारपत्र की होती है; यह किसी लेखक के निजी मत के रूप में प्रकाशित नहीं होता।

चरण 1: संपादकीय की प्रतिनिधि भूमिका समझें संपादकीय के विचार पूरे समाचारपत्र की नीति और दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करते हैं। उसे पढ़ते समय पाठक उसे किसी एक व्यक्ति की स्वतंत्र निजी टिप्पणी के रूप में नहीं देखता।

चरण 2: नाम न देने का कारण जोड़ें संपादकीय भले ही संपादक या संपादकीय विभाग के किसी लेखक ने लिखा हो, उसके नीचे व्यक्तिगत नाम नहीं दिया जाता। इससे स्पष्ट रहता है कि व्यक्त किया गया मत समाचारपत्र का है और उसके लिए संस्था उत्तरदायी है।

चरण 3: निष्कर्ष संपादकीय में संपादक या लेखक का नाम इसलिए नहीं दिया जाता, क्योंकि वह किसी व्यक्ति की निजी राय के बजाय समाचारपत्र की आधिकारिक राय और नीति का प्रतिनिधित्व करता है।

त्वरित सुझाव: कारण बताते समय 'समाचारपत्र की संस्थागत राय' लिखें; लेखक की पहचान छिपाना संपादकीय का उद्देश्य न बताएँ।

5(ख). 'बढ़ती आबादी - देश की बरबादी' विषय पर एक आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में किसी सामाजिक विषय का क्रमबद्ध विवेचन किया जाता है। प्रभावी शीर्षक, लेखक का नाम, विषय की भूमिका, कारण, प्रभाव और समाधान इसके मुख्य अंग हैं।
- इस विषय में आबादी की अनियोजित वृद्धि और सीमित संसाधनों के बीच असंतुलन समझाना आवश्यक है। शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वैच्छिक परिवार-नियोजन जैसे उपायों से समाधान स्पष्ट किया जा सकता है।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना बनाइए पहले दिए गए विषय को शीर्षक बनाकर लेखक का नाम लिखें। भूमिका में जनसंख्या और संसाधनों का संबंध रखें। अगले अनुच्छेदों में जनसंख्या-वृद्धि के कारण तथा रोजगार, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण पर उसका प्रभाव समझाएँ। अंत में व्यावहारिक उपाय दें। अप्रमाणित आँकड़ों के स्थान पर तर्क और सामान्य जीवन के उदाहरण रखें। आबादी को अपने-आप में अभिशाप न बताकर अनियोजित वृद्धि की समस्या पर ध्यान केंद्रित करें।

चरण 2: पूरा आदर्श आलेख लिखिए **बढ़ती आबादी - देश की बरबादी**

लेखक: अजय कुमार

किसी देश की शक्ति उसके नागरिक होते हैं, किंतु जब जनसंख्या की वृद्धि उपलब्ध संसाधनों और विकास की गति से अधिक हो जाती है, तब वही शक्ति गंभीर चुनौती बन जाती है। बढ़ती आबादी के लिए पर्याप्त भोजन, आवास, रोजगार, शिक्षा और चिकित्सा उपलब्ध कराना कठिन होता जाता है।

अशिक्षा, बाल-विवाह, पुत्र की चाह तथा परिवार-नियोजन संबंधी जानकारी का अभाव इस समस्या को बढ़ाते हैं। अनेक परिवार संतान की शिक्षा और स्वास्थ्य पर होने वाले व्यय का अनुमान किए बिना परिवार का विस्तार करते हैं। महिलाओं की निर्णय लेने की सीमित स्वतंत्रता भी इस स्थिति को प्रभावित करती है।

अनियोजित जनसंख्या-वृद्धि से विद्यालयों, अस्पतालों और यातायात पर दबाव बढ़ता है। रोजगार के अवसर सीमित होने पर बेरोजगारी और गरीबी गहराती हैं। आवास की माँग पूरी करने के लिए कृषि-भूमि और हरियाली घटती है। जल, ऊर्जा और अन्य प्राकृतिक संसाधनों की बढ़ती खपत पर्यावरण का संतुलन बिगाड़ती है। फलतः विकास के लाभ प्रत्येक नागरिक तक पहुँचाना कठिन हो जाता है।

समाधान केवल नारों में नहीं, शिक्षा और जागरूकता में है। बालिकाओं की शिक्षा, विवाह की उचित आयु, मातृ-स्वास्थ्य सेवाएँ और परिवार-नियोजन के साधनों की सहज उपलब्धता आवश्यक हैं। छोटे परिवार के लाभ समझाए जाएँ तथा स्त्री-पुरुष समानता को बढ़ावा दिया जाए। निर्णय स्वैच्छिक और जानकारी पर आधारित हों।

नागरिकों को शिक्षित, स्वस्थ और कुशल बनाकर ही जनसंख्या को देश की संपदा बनाया जा सकता है। इसलिए जनसंख्या-वृद्धि में संतुलन और संसाधनों का न्यायपूर्ण उपयोग हमारी साझा जिम्मेदारी है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रस्तुत आलेख अनियोजित जनसंख्या-वृद्धि के कारण और दुष्परिणाम स्पष्ट करते हुए शिक्षा, समानता, स्वास्थ्य-सेवाओं और स्वैच्छिक परिवार-नियोजन को समाधान के रूप में रखता है।

त्वरित सुझाव: इस आलेख की रूपरेखा बनाते समय कारण, संसाधनों पर प्रभाव और समाधान के लिए अलग-अलग अनुच्छेद तय करें; अंत में नागरिकों की साझा जिम्मेदारी अवश्य जोड़ें।

अथवा

5(ख). अथवा सड़कों पर दिन-प्रतिदिन होने वाली दुर्घटनाओं के कारणों पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रिपोर्ट किसी घटना या समस्या की तथ्यपरक और क्रमबद्ध प्रस्तुति होती है। इसमें उपयुक्त शीर्षक, रिपोर्टर का नाम, स्थान, तिथि तथा विषय का स्पष्ट विवरण दिया जाता है।
- सड़क-दुर्घटनाओं के कारणों की रिपोर्ट में चालक की लापरवाही, सड़क की दशा, वाहन की तकनीकी स्थिति और यातायात-व्यवस्था का विश्लेषण आवश्यक है। अप्रमाणित आँकड़े और मनगढ़ंत विशेषज्ञ-कथन नहीं जोड़ने चाहिए।

चरण 1: रिपोर्ट का प्रारूप और क्रम तय कीजिए शीर्षक में सड़क-दुर्घटनाओं की समस्या और कारणों को प्रमुखता दें। उसके नीचे रिपोर्टर का नाम तथा स्थान और तिथि लिखें। आरंभिक अनुच्छेद में समस्या का परिचय दें। मुख्य विवरण में तेज रफ्तार, नशे में वाहन चलाना, मोबाइल का प्रयोग, नियमों का उल्लंघन, खराब सड़कें और वाहनों की खराबी का संबंध दुर्घटनाओं से स्पष्ट करें। हेलमेट तथा सीट-बेल्ट का अभाव मुख्यतः चोट की गंभीरता बढ़ाता है; इसे दुर्घटना घटित होने के कारणों से अलग रखें। अंतिम अनुच्छेद में रोकथाम के व्यावहारिक उपाय संक्षेप में दें।

चरण 2: पूरी आदर्श रिपोर्ट लिखिए **सड़क-दुर्घटनाओं के प्रमुख कारण: लापरवाही और अव्यवस्था**

रिपोर्टर: अजय कुमार

नई दिल्ली, 15 मार्च 2009। सड़कों पर होने वाली दुर्घटनाएँ जनजीवन की सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती हैं। इनका संबंध केवल वाहनों की बढ़ती संख्या से नहीं, बल्कि नियमों की अनदेखी, खराब सड़क-व्यवस्था और वाहनों के अपर्याप्त रखरखाव से भी है।

तेज गति दुर्घटनाओं का प्रमुख कारण है। इससे अचानक बाधा आने पर वाहन रोकने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिलता। लाल बत्ती पार करना, गलत दिशा में चलना तथा असावधानी से आगे निकलना टक्कर का खतरा बढ़ाते हैं। नशे, थकान या नींद की स्थिति में वाहन चलाने से चालक की निर्णय-क्षमता प्रभावित होती है। वाहन चलाते समय मोबाइल पर बात करना भी ध्यान भटकाता है।

गड्ढों वाली सड़कें, अपर्याप्त प्रकाश, अस्पष्ट यातायात-संकेत और अतिक्रमण स्थिति को अधिक जोखिमपूर्ण बनाते हैं। पैदल यात्रियों के लिए सुरक्षित पार-पथ का अभाव तथा बिना सावधानी सड़क पार करना भी दुर्घटनाओं की आशंका बढ़ाते हैं। वाहन के ब्रेक, टायर और बत्तियों की नियमित जाँच न होने पर तकनीकी खराबी दुर्घटना का कारण बन सकती है।

हेलमेट और सीट-बेल्ट का प्रयोग न करने से दुर्घटना में चोट गंभीर होने की आशंका बढ़ती है। दुर्घटना के बाद सहायता मिलने में देरी भी पीड़ित की स्थिति बिगाड़ सकती है।

रोकथाम के लिए गति-सीमा का पालन, चालकों का प्रशिक्षण, नियमित वाहन-जाँच और सड़कों की मरम्मत आवश्यक हैं। स्पष्ट संकेत, सुरक्षित पैदल-पार-पथ तथा यातायात-नियमों का प्रभावी पालन सड़क-सुरक्षा को बेहतर बना सकते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष रिपोर्ट में चालक की असावधानी, नियमों का उल्लंघन, सड़क की कमियाँ और वाहन की तकनीकी खराबियाँ दुर्घटनाओं के मुख्य कारण बताए गए हैं। चोट की गंभीरता बढ़ाने वाले कारणों को अलग स्पष्ट करके सुरक्षा के उपाय भी दिए गए हैं।

त्वरित सुझाव: सड़क-दुर्घटनाओं की रिपोर्ट में चालक, सड़क, वाहन और यातायात-व्यवस्था के कारण अलग सोचें; हेलमेट न पहनने को टक्कर का कारण न लिखकर गंभीर चोट का जोखिम बताएँ।

6. 'आतंकवाद की समस्या' अथवा 'चुनावी वायदे' विषय पर फ़ीचर का आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी विषय के मानवीय पक्ष को रोचक आरंभ, सजीव भाषा और विचारपूर्ण प्रस्तुति के माध्यम से सामने लाता है।
- आकर्षक शीर्षक, लेखक का नाम, विषय का विस्तार और प्रभावी समापन फ़ीचर को व्यवस्थित बनाते हैं। प्रश्न में दिए गए दोनों

विषयों के नमूना आलेख नीचे प्रस्तुत हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना बनाइए आतंकवाद वाले फ़ीचर की शुरुआत सामान्य जीवन पर पड़े भय के प्रभाव से कीजिए। इसके बाद निर्दोष लोगों की पीड़ा, सामाजिक अविश्वास, सुरक्षा और मानवीय एकता का विवेचन कीजिए। चुनावी वायदों वाले फ़ीचर में चुनाव के समय का दृश्य, मतदाताओं की अपेक्षाएँ, घोषणाओं की व्यावहारिकता और नागरिक निगरानी को क्रम से रखिए। किसी कल्पित घटना को वास्तविक समाचार या अप्रमाणित आँकड़े को तथ्य बनाकर न लिखिए।

चरण 2: प्रथम विषय का मॉडल फ़ीचर पढ़िए **आतंक के साए से उजाले की ओर**

लेखक : एक जागरूक नागरिक

बच्चे स्कूल जाएँ, दुकानों पर चहल-पहल हो और शाम को लोग सकुशल घर लौटें, यही तो सामान्य जीवन है। आतंकवाद इसी सहज विश्वास पर चोट करता है। किसी विस्फोट में केवल इमारत नहीं टूटती; अनेक परिवारों के सपने और समाज का भरोसा भी बिखर जाता है।

हिंसा और भय के सहारे अपने उद्देश्य मनवाने की प्रवृत्ति आतंकवाद का मूल है। इसकी सबसे बड़ी कीमत वे निर्दोष लोग चुकाते हैं, जिनका किसी संघर्ष से संबंध नहीं होता। कोई अपना सहारा खो देता है, कोई आजीवन घायल रहता है और किसी बच्चे के मन में भय घर कर जाता है। कारोबार, पर्यटन और शिक्षा भी प्रभावित होते हैं।

आतंक का एक और घाव दिखाई नहीं देता। वह लोगों के बीच संदेह पैदा करता है। जब किसी अपराध के लिए पूरे समुदाय को दोषी ठहराया जाता है, तो अपराधियों की विभाजनकारी मंशा और मजबूत होती है। इसलिए आतंकवाद का मुकाबला करते हुए सामाजिक सद्भाव बचाना भी आवश्यक है।

सतर्क सुरक्षा व्यवस्था, प्रभावी खुफिया तंत्र, कानून के अनुसार निष्पक्ष कार्रवाई और देशों का सहयोग आवश्यक हैं। साथ ही युवाओं को शिक्षा, अवसर और संवाद से जोड़ना होगा। नागरिकों को अफवाहें फैलाने के बजाय सत्यापित सूचना पर भरोसा करना चाहिए और संदिग्ध गतिविधि की सूचना संबंधित अधिकारियों को देनी चाहिए।

आतंक का उत्तर साहस, न्याय और एकजुटता में है। घायल समाज को केवल सुरक्षा नहीं, संवेदना भी चाहिए। जब हम भय के बावजूद एक-दूसरे का हाथ थामते हैं, तभी सामान्य जीवन की रोशनी फिर लौटती है।

चरण 3: द्वितीय विषय का मॉडल फ़ीचर पढ़िए **वायदों की चमक और मतदाता की कसौटी**

लेखक : एक जागरूक नागरिक

चुनाव आते ही गलियों में पोस्टर सजने लगते हैं और मंचों से उज्ज्वल भविष्य की तस्वीर खींची जाने लगती है। कहीं रोजगार का भरोसा है, कहीं बेहतर सड़क, अस्पताल और विद्यालय का वायदा। इन घोषणाओं के बीच साधारण मतदाता अपनी रोजमर्रा की कठिनाइयों का समाधान खोजता है।

चुनावी वायदे लोकतंत्र में उपयोगी भूमिका निभा सकते हैं। इनके माध्यम से राजनीतिक दल अपनी प्राथमिकताएँ बताते हैं और जनता के सामने काम की दिशा रखते हैं। मतदाता अलग-अलग कार्यक्रमों की तुलना करके अपना प्रतिनिधि चुन सकता है। लेकिन समस्या तब पैदा होती है जब घोषणा आकर्षक तो हो, उसके लिए संसाधन, समयसीमा और स्पष्ट योजना न हो।

पानी की प्रतीक्षा में खड़ी गृहिणी, रोजगार खोजता युवक और उपचार के लिए भटकता रोगी भाषणों से आगे देखना चाहते हैं। उनके लिए वायदे का मूल्य उस बदलाव में है, जो जीवन में सचमुच दिखाई दे। इसलिए घोषणा का मूल्यांकन उसके शोर से नहीं, उसकी उपयोगिता और व्यवहार्यता से होना चाहिए।

जागरूक मतदाता पूछ सकता है कि योजना कब पूरी होगी, धन कहाँ से आएगा और जिम्मेदार कौन होगा। पिछले कार्यों का आकलन, घोषणापत्र का अध्ययन और स्थानीय समस्याओं पर चर्चा उसके निर्णय को मजबूत बनाते हैं। चुनाव के बाद भी जनप्रतिनिधियों से संवाद और काम की समीक्षा जारी रहनी चाहिए। समाचार माध्यमों की तथ्यपरक पड़ताल इस प्रक्रिया में सहायक है।

लोकतंत्र केवल मतदान का दिन नहीं, निरंतर जवाबदेही का संबंध है। जब नागरिक वायदों को याद रखते हैं और उनके परिणाम पूछते हैं, तब चुनावी घोषणाएँ सार्वजनिक जिम्मेदारी में बदल सकती हैं। मतदाता की सजगता ही वायदों की असली परीक्षा है।

चरण 4: निष्कर्ष दोनों फ़ीचर मानवीय अनुभव से शुरू होकर समस्या का विवेचन और विचारपूर्ण समापन प्रस्तुत करते हैं। परीक्षा में चुने गए विषय पर इसी प्रकार एक संगठित, रोचक और विषयानुकूल आलेख लिखा जा सकता है।

त्वरित सुझाव: आतंकवाद पर पीड़ितों की संवेदना और सामाजिक एकता को, तथा चुनावी वायदों पर मतदाता की अपेक्षा और जवाबदेही को केंद्र में रखिए; केवल नारों की सूची न बनाइए।

7(क). निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: यह तेरी रण-तरी भरी आकांक्षाओं से, घन, भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर उर में पृथ्वी के, आशाओं से नवजीवन की, ऊँचा कर सिर, ताक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल! फिर-फिर बार-बार गर्जन वर्षण है मूसलाधार, हृदय थाम लेता संसार सुन-सुन घोर वज्र-हुंकार। बादलों को 'विप्लव के बादल' क्यों कहा गया है?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निराला के काव्यांश में बादल प्राकृतिक शक्ति होने के साथ सामाजिक परिवर्तन और क्रांति के प्रतीक हैं।
- बादल की गर्जना और वर्षा का प्रभाव दोहरा है : सुप्त अंकुरों में नवजीवन की आशा और पुराने संसार में भय।

चरण 1: बादल के जागरणकारी रूप को पहचानिए कवि बादल को 'विप्लव के बादल' कहता है क्योंकि उसकी गर्जना क्रांति के उद्घोष जैसी है। 'भेरी-गर्जन' से पृथ्वी के भीतर सोए अंकुर सजग हो जाते हैं। जैसे वर्षा से ये अंकुर नई शक्ति पाते हैं, वैसे ही क्रांति शोषित और उपेक्षित लोगों में जीवन बदलने की आशा जगाती है।

चरण 2: परिवर्तन के दो प्रभाव समझाइए बादल की 'घोर वज्र-हुंकार' सुनकर संसार हृदय थाम लेता है, जबकि अंकुर सिर उठाकर उसकी ओर देखते हैं। यह विरोध बताता है कि परिवर्तन से लाभ पाने वाली शक्तियाँ उसका स्वागत करती हैं और पुरानी व्यवस्था से जुड़ी शक्तियाँ भयभीत होती हैं। इस प्रकार बादल का रूप केवल वर्षा करने वाला नहीं, अन्यायपूर्ण व्यवस्था को बदलने वाली शक्ति का भी है।

चरण 3: निष्कर्ष बादलों को 'विप्लव के बादल' इसलिए कहा गया है कि वे अपनी गर्जना से क्रांति का आह्वान करते हैं तथा शोषित जनों को जागरण, आशा और नए जीवन का संदेश देते हैं।

त्वरित सुझाव: 'विप्लव' का उत्तर देते समय 'भेरी-गर्जन' को क्रांति के आह्वान और जागते अंकुरों को शोषित जनों की आशा से जोड़िए।

7(ख). बादलों की युद्ध-नौका में क्या भरा है? उसका लाभ किन्हें और कैसे मिलेगा? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'रण-तरी' का अर्थ युद्ध-नौका है; कविता में यह बादल के क्रांतिकारी अभियान का रूपक है।
- अंकुरों को मिलने वाला नया जीवन सामाजिक स्तर पर शोषित जनों के उत्थान और उनकी आशाओं की पूर्ति का संकेत है।

चरण 1: युद्ध-नौका में भरी वस्तु बताइए 'यह तेरी रण-तरी भरी आकांक्षाओं से' पंक्ति के अनुसार बादलों की युद्ध-नौका में आकांक्षाएँ भरी हैं। ये नवजीवन की आकांक्षाएँ हैं, जिन्हें पृथ्वी के भीतर सोए अंकुर संजोए हुए हैं। प्रतीकात्मक अर्थ में ये शोषित, पीड़ित और वंचित लोगों की सुखद, स्वतंत्र तथा सम्मानपूर्ण जीवन की इच्छाएँ हैं।

चरण 2: लाभ पाने वालों और लाभ का ढंग समझाइए बादलों की गर्जना अंकुरों को जगाती है और वर्षा उन्हें बढ़ने के लिए जल देती है। इस प्रकार वे धरती से सिर उठाकर नया जीवन प्राप्त करते हैं। इसी के समान बादल रूपी क्रांति से उपेक्षित जनों को लाभ मिलेगा। उनमें चेतना और संघर्ष का साहस जागेगा तथा शोषण से मुक्ति और जीवन की दशा सुधारने की आशा साकार हो सकेगी। कविता की वर्षा इस परिवर्तन की जीवनदायिनी शक्ति है।

चरण 3: निष्कर्ष युद्ध-नौका जन-आकांक्षाओं से भरी है। उसका लाभ अंकुर रूपी शोषित-वंचित जनों को जागरण, शोषण से मुक्ति और नए जीवन के अवसर के रूप में मिलेगा।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के तीनों संकेत अलग रखिए : नौका में आकांक्षाएँ, लाभार्थी अंकुर या शोषित जन, और लाभ नवजीवन तथा मुक्ति।

7(ग). नवजीवन की आशा में कौन सिर उठाए हुए हैं? उन्हें क्रांति का लाभ किस प्रकार प्राप्त होगा? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में पृथ्वी के हृदय में सोए अंकुर नए जीवन की आशा रखने वाली शक्तियों का प्रतीक हैं।
- प्राकृतिक स्तर पर वर्षा अंकुरों का पोषण करती है; सामाजिक स्तर पर क्रांति शोषित जनों के जीवन में परिवर्तन की आशा जगाती है।

चरण 1: सिर उठाकर देखने वालों को पहचानिए 'सजग सुप्त अंकुर' और 'ऊँचा कर सिर, ताक रहे हैं' से स्पष्ट है कि पृथ्वी के भीतर सोए अंकुर बादल की गर्जना से जागकर नवजीवन की आशा में सिर उठाए हुए हैं। प्रतीकात्मक अर्थ में ये अंकुर गरीब, शोषित और वंचित जन हैं। वे क्रांति की प्रतीक्षा कर रहे हैं, क्योंकि उसमें उन्हें अपनी दबी हुई आकांक्षाओं की पूर्ति दिखाई देती है।

चरण 2: क्रांति से मिलने वाला लाभ स्पष्ट कीजिए वर्षा का जल अंकुरों को बढ़ने और धरती से बाहर आने की शक्ति देता है। उसी प्रकार क्रांति शोषित जनों में चेतना, साहस और आत्मविश्वास जगाएगी। अन्याय और शोषण पर आधारित व्यवस्था में परिवर्तन होने से उन्हें सम्मानपूर्ण जीवन तथा आगे बढ़ने के अवसर मिल सकेंगे। अत: उनकी आशा केवल जागने की नहीं, अपनी दबी शक्तियों को विकसित करके नए जीवन में प्रवेश करने की है।

चरण 3: निष्कर्ष सुप्त अंकुर रूपी शोषित-वंचित लोग नवजीवन की आशा में सिर उठाए हुए हैं। क्रांति उन्हें शोषण से मुक्ति, जागृति और विकास के अवसर देकर लाभ पहुँचाएगी।

त्वरित सुझाव: पहले 'सुप्त अंकुर' का सीधा उत्तर लिखिए, फिर उसका सामाजिक प्रतीक बताकर वर्षा से विकास और क्रांति से मुक्ति का संबंध समझाइए।

7(घ). संसार बादल के किस रूप से ग्रस्त है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निराला की कविता में बादल का गर्जन क्रांति और परिवर्तन की शक्ति का प्रतीक है। उसका प्रभाव सभी वर्गों पर एक जैसा नहीं पड़ता।
- काव्यांश में भय का संकेत संसार के हृदय थाम लेने से मिलता है; प्रश्न में उसी भयकारी रूप की पहचान अपेक्षित है।

चरण 1: बादल का भयकारी रूप पहचानिए बादल बार-बार गर्जना करता है, घोर वज्र जैसा हुंकार भरता है और मूसलाधार वर्षा करता है। उसके इस प्रचंड, विध्वंसकारी रूप को सुनकर संसार भयभीत होकर हृदय थाम लेता है। अत: यहाँ उसके कोमल या केवल जीवनदायी रूप की बात नहीं है।

चरण 2: प्रतीकात्मक आशय स्पष्ट कीजिए बादल क्रांति का प्रतीक है। उसका गर्जन उस परिवर्तन की सूचना देता है जो जड़ व्यवस्था तथा शोषकों के वैभव को हिला सकता है। इसलिए विशेषत: संपन्न और शोषक वर्ग उससे आतंकित है, जबकि छोटे अंकुर और पीड़ित जन उसमें नए जीवन की आशा देखते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष संसार बादल के घोर गर्जन, वज्र-हुंकार और मूसलाधार वर्षा वाले प्रचंड रूप से भयग्रस्त है। उसका क्रांतिकारी स्वर शोषक वर्ग में विनाश का भय जगाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले गर्जन और वज्र-हुंकार का प्रत्यक्ष अर्थ लिखिए, फिर बादल के क्रांति-प्रतीक होने का संकेत दीजिए।

अथवा

7(क). अथवा (लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप काव्यांश पर आधारित प्रश्न): भाई के बिना जीवन की तुलना किनसे की गई है और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास के इस प्रसंग में लक्ष्मण की मूर्च्छा से व्याकुल राम का गहरा भ्रातृप्रेम व्यक्त हुआ है।
- उपमाएँ किसी आवश्यक अंग या शक्ति के छिन जाने की स्थिति बताती हैं; इनके माध्यम से राम अपनी असहायता व्यक्त करते हैं।

चरण 1: तीनों उपमाएँ पहचानिए भाई के बिना राम अपने जीवन की तुलना पंखों के बिना अत्यंत दीन पक्षी, मणि के बिना सर्प तथा सूँड़ के बिना हाथी से करते हैं। इन तीनों में वह महत्त्वपूर्ण अंग या वस्तु नहीं रही जो उनकी शक्ति, गति अथवा गौरव का आधार है।

चरण 2: तुलनाओं का कारण समझाइए पंखहीन पक्षी उड़ नहीं सकता, मणिहीन सर्प का गौरव समाप्त हो जाता है और सूँड़हीन हाथी असहाय हो जाता है। इसी प्रकार राम के लिए लक्ष्मण केवल साथ चलने वाले भाई नहीं, जीवन के अत्यंत आत्मीय सहचर और संबल हैं। उनके बिना राम स्वयं को शक्तिहीन, दीन और अपूर्ण अनुभव करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष राम ने भाई-विहीन जीवन को पंखहीन पक्षी, मणिहीन सर्प और सूँड़हीन हाथी के समान बताया है, क्योंकि लक्ष्मण के बिना उनका जीवन अपना आवश्यक सहारा और सामर्थ्य खो देगा।

त्वरित सुझाव: तीनों तुलनाएँ पूरी लिखिए और प्रत्येक को आवश्यक सहारे के अभाव से जोड़िए; केवल उपमानों की सूची पर्याप्त नहीं है।

7(ख). काव्यांश के आधार पर राम के व्यक्तित्व पर टिप्पणी कीजिए? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लक्ष्मण की मूर्च्छा के प्रसंग में राम का संवेदनशील, स्नेही और मानवीय व्यक्तित्व उभरता है।
- चरित्र संबंधी उत्तर में गुण के साथ उसका प्रसंगगत आधार देना चाहिए; यहाँ आधार राम की व्याकुलता और आत्मग्लानि है।

चरण 1: भ्रातृप्रेम और संवेदनशीलता स्पष्ट कीजिए राम लक्ष्मण के बिना अपने जीवन को निराधार और असहाय मानते हैं। भाई के वियोग की आशंका उन्हें इतना व्याकुल कर देती है कि वे साधारण मनुष्य की तरह विलाप करने लगते हैं। इससे उनका गहरा भ्रातृप्रेम और कोमल हृदय प्रकट होता है।

चरण 2: उत्तरदायित्व और आत्मग्लानि दिखाइए राम को चिंता है कि लक्ष्मण को खोकर वे अयोध्या किस मुँह से लौटेंगे। पत्नी को पाने के प्रयत्न में प्रिय भाई को गँवा देने की कल्पना उन्हें ग्लानि से भर देती है। वे अपने निर्णयों पर भी पश्चात्ताप करते हैं। यह अपने परिजनों के प्रति उत्तरदायित्व-बोध और संबंधों को महत्त्व देने वाले व्यक्तित्व का परिचायक है।

चरण 3: निष्कर्ष राम अत्यंत भ्रातृवत्सल, संवेदनशील और उत्तरदायी हैं। लक्ष्मण की दशा से उपजा उनका विलाप उनके चरित्र के सहज मानवीय पक्ष को सामने लाता है।

त्वरित सुझाव: राम का प्रत्येक गुण लक्ष्मण-वियोग की आशंका, विलाप या अयोध्या लौटने की चिंता से जोड़कर लिखिए।

7(ग). काव्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि राम किसकी अपेक्षा भाई को अधिक महत्त्व दे रहे हैं और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस प्रसंग में राम लक्ष्मण के संभावित वियोग से व्याकुल होकर सहोदर भाई के संबंध की अपूरणीयता बताते हैं।
- प्रश्न संबंधों की सामान्य सामाजिक तुलना नहीं, संकट के क्षण में राम की भावनात्मक प्राथमिकता पूछता है।

चरण 1: तुलना के दोनों पक्ष स्पष्ट कीजिए राम पत्नी सीता की अपेक्षा अपने भाई लक्ष्मण को अधिक महत्त्व दे रहे हैं। उन्हें लगता है कि पत्नी को पाने के लिए युद्ध करते हुए यदि प्रिय भाई खो गया तो यह असहनीय क्षति होगी। इस समय उनकी चिंता का केंद्र लक्ष्मण का जीवन है।

चरण 2: भाई को अधिक महत्त्व देने का कारण लिखिए राम के अनुसार पुत्र, धन, पत्नी, भवन और परिवार जैसे संबंध अथवा साधन फिर प्राप्त हो सकते हैं, पर सहोदर भाई दोबारा नहीं मिल सकता। लक्ष्मण ने उनके सुख-दुःख में निरंतर साथ दिया है। इसलिए वे भाई के बिना अपने को सर्वथा असहाय मानते हैं और पत्नी के लिए भाई को गँवा देने की कल्पना से व्यथित हैं।

चरण 3: निष्कर्ष राम पत्नी की अपेक्षा सहोदर भाई को अधिक महत्त्व देते हैं, क्योंकि उनके लिए लक्ष्मण का स्नेह और साथ अपूरणीय है; भाई के खो जाने की भरपाई संभव नहीं है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पत्नी की अपेक्षा भाई का नाम स्पष्ट करें और कारण में सहोदर भाई के पुनः न मिल सकने की बात अवश्य लिखें।

7(घ). 'जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई' कथन के पीछे निहित भावना पर टिप्पणी कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अयोध्या लौटने की चिंता राम के भ्रातृप्रेम, आत्मग्लानि और परिवार के प्रति उत्तरदायित्व-बोध को व्यक्त करती है।
- कथन का भावार्थ बताते समय उसके प्रसंग को समझना आवश्यक है: लक्ष्मण मूर्च्छित हैं और राम उनके वियोग की आशंका से व्याकुल हैं।

चरण 1: कथन का प्रसंग और सीधा अर्थ बताइए राम की आशंका है कि यदि लक्ष्मण जीवित नहीं रहे तो वे अयोध्या लौटकर परिजनों का सामना कैसे करेंगे। जिस प्रिय भाई को अपने साथ लाए थे, उसे साथ वापस न ले जा पाने का विचार उन्हें अत्यंत लज्जित और दुखी कर रहा है।

चरण 2: भीतर छिपी ग्लानि और लोकचिंता समझाइए राम को भय है कि लोग कहेंगे कि उन्होंने पत्नी के लिए अपने प्रिय भाई को गँवा दिया। यह विचार केवल लोकनिंदा का डर नहीं, अपने भाई की रक्षा न कर पाने की आत्मग्लानि भी है। उन्हें अपने परिजनों के दुःख तथा उनके सामने उत्तर देने की कठिनाई का अनुभव हो रहा है।

चरण 3: निष्कर्ष इस कथन में राम का गहरा भ्रातृप्रेम, लक्ष्मण को खो देने की आशंका, आत्मग्लानि और परिजनों के सामने लज्जित होने की भावना निहित है।

त्वरित सुझाव: इस पंक्ति का अर्थ केवल बदनामी का भय न लिखें; उसे भाई के प्रति प्रेम और पारिवारिक उत्तरदायित्व से भी जोड़ें।

8(क). निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: तुम्हें भूल जाने की दक्षिण ध्रुवी अंधकार-अमावस्या शरीर पर, चेहरे पर, अंतर में पा लूँ मैं झेलूँ मैं, उसी में नहा लूँ मैं इसलिए कि तुमसे ही परिवेष्टित आच्छादित रहने का रमणीय यह उजेला अब सहा नहीं जाता है। अमावस्या के लिए प्रयुक्त विशेषणों से काव्यार्थ में क्या विशेषता आई है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विशेषण किसी भाव की तीव्रता और विशिष्टता बढ़ाते हैं। यहाँ अंधकार का बिंब प्रिय को पूरी तरह भूल जाने की इच्छा को मूर्त करता है।
- काव्यांश में प्रिय की स्मृति का उजाला असहनीय हो गया है; कवि उससे मुक्ति के लिए गहरे विस्मरण की कामना करता है।

चरण 1: विशेषणों का अर्थ खोलिए अमावस्या के साथ दक्षिण ध्रुवी और अंधकार का प्रयोग हुआ है। दक्षिण ध्रुवी विशेषण ध्रुव प्रदेश की लंबी रात और गहन अँधेरे का बोध कराता है। अंधकार शब्द अमावस्या की कालिमा को और सघन करता है। इससे सामान्य रात की अपेक्षा अधिक दीर्घ, घने और सर्वव्यापी अँधेरे की अनुभूति होती है।

चरण 2: विशेषणों से समृद्ध काव्यार्थ समझाइए कवि प्रिय को क्षण भर के लिए नहीं, पूरी तरह भूल जाना चाहता है। वह विस्मृति के अँधेरे को शरीर, चेहरे और अंतर्मन तक अनुभव करना तथा उसी में डूब जाना चाहता है। इन विशेषणों ने भूलने की इच्छा की तीव्रता स्पष्ट की है और स्मृति के रमणीय उजाले के सामने विस्मृति का प्रभावशाली बिंब खड़ा किया है।

चरण 3: निष्कर्ष दक्षिण ध्रुवी और अंधकार विशेषणों ने अमावस्या को अत्यंत घना, दीर्घ और सर्वग्रासी बनाया है। इससे प्रिय को पूर्णतः भुला देने की तीव्र आकांक्षा अधिक प्रभावशाली हुई है।

त्वरित सुझाव: पहले विशेषणों से बने अँधेरे की विशेषता बताइए, फिर उसे प्रिय की स्मृति से पूर्ण मुक्ति की कामना से जोड़िए।

8(ख). 'मैं तुम्हें भूल जाना चाहता हूँ' — इस सामान्य कथन को व्यक्त करने के लिए कवि ने क्या युक्ति अपनाई है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता सामान्य कथन को बिंबों और प्रतीकों द्वारा गहरी अनुभूति में बदलती है।
- प्रिय की स्मृति से मुक्त होने की इच्छा यहाँ विस्मृति के अंधकार और स्मृति के उजाले के विरोध से व्यक्त हुई है।

चरण 1: विस्मृति का बिंब पहचानिए कवि ने सीधे यह नहीं कहा कि वह प्रिय को भूलना चाहता है। उसने भूलने की दशा को 'दक्षिण ध्रुवी अंधकार-अमावस्या' का रूप दिया है। वह चाहता है कि यह गहरा अंधकार उसके शरीर, चेहरे और अंतर्मन पर फैल जाए। इस प्रकार भूलने की अमूर्त इच्छा को पूरे अस्तित्व को ढक लेने वाले अंधकार का मूर्त बिंब मिल गया है।

चरण 2: स्मृति और विस्मृति का विरोध समझिए प्रिय के स्नेह की आभा उसके मन में उजाला फैलाए हुए है। कवि उस स्मृति से इतना घिरा है कि ममता के बादल की रिमझिम बरसात और उजाला भी अब सहन नहीं कर पा रहा। इसलिए वह घने अंधकार में डूबने और उसी में नहाने की इच्छा व्यक्त करता है। अंधकार में नहाने की यह कल्पना प्रिय की स्मृति से सर्वथा मुक्त होने की उसकी तीव्र चाह को प्रभावशाली बनाती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने भूल जाने के सामान्य कथन को दक्षिण ध्रुव के घने अंधकार में डूबने और नहाने के बिंब द्वारा व्यक्त किया है। स्मृति के उजाले तथा विस्मृति के अंधकार का विरोध इस भाव को गहन बनाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में सामान्य कथन दोहराने के बजाय 'अंधकार-अमावस्या' के बिंब को भूलने की इच्छा से जोड़कर उसकी व्यंजना स्पष्ट कीजिए।

8(ग). काव्यांश के शिल्प-सौंदर्य को स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिल्प-सौंदर्य में भाषा, बिंब, प्रतीक और काव्य-रूप का भाव से संबंध स्पष्ट किया जाता है।
- इस काव्यांश में विस्मृति के अंधकार और स्मृति के उजाले के बिंब तथा शब्दों की पुनरावृत्ति कवि के अंतर्द्वंद्व को व्यक्त करते हैं।

चरण 1: बिंब और प्रतीकों का सौंदर्य बताइए 'दक्षिण ध्रुवी अंधकार-अमावस्या' विस्मृति के घने और दीर्घकालिक अंधकार का सशक्त बिंब है। अंधकार को शरीर, चेहरे और अंतर्मन पर पाने तथा उसी में नहाने की कल्पना भीतरी अनुभूति को मूर्त बनाती है। दूसरी ओर प्रिय की स्मृति 'रमणीय उजाले' के रूप में व्यक्त हुई है। सुंदर उजाला भी सहन न होने का कथन कवि की व्याकुल मनोदशा और उसके भावों की जटिलता को प्रभावशाली ढंग से उभारता है।

चरण 2: भाषा और लय का प्रभाव स्पष्ट कीजिए 'पा लूँ मैं', 'झेलूँ मैं' और 'नहा लूँ मैं' में 'मैं' की पुनरावृत्ति तथा समान वाक्य-विन्यास आंतरिक लय पैदा करते हैं और कवि की उत्कट इच्छा पर बल देते हैं। 'शरीर पर, चेहरे पर, अंतर में' का क्रम अनुभूति के बाहरी से भीतरी विस्तार को दिखाता है। भाषा भावपूर्ण खड़ी बोली है; 'परिवेष्टित', 'आच्छादित' और 'रमणीय' जैसे तत्सम शब्द उसकी गंभीरता बढ़ाते हैं। मुक्तछंद के कारण भावों का प्रवाह स्वाभाविक बना रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष अंधकार और उजाले के प्रतीकात्मक बिंब, 'मैं' की पुनरावृत्ति, तत्समप्रधान खड़ी बोली तथा मुक्तछंद की आंतरिक लय इस काव्यांश का प्रमुख शिल्प-सौंदर्य हैं। ये कवि की विस्मृति की तीव्र इच्छा और अंतर्द्वंद्व को साकार करते हैं।

त्वरित सुझाव: शिल्प की हर विशेषता का उदाहरण इसी काव्यांश से चुनिए; 'पा लूँ मैं, झेलूँ मैं, नहा लूँ मैं' को पुनरावृत्ति और आंतरिक लय से जोड़िए।

अथवा

8(क). अथवा (बात सीधी थी पर काव्यांश पर आधारित प्रश्न): बात की चूड़ी मर जाने और बेकार घूमने से कवि क्या कहना चाहता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में बात भाव या विचार का और भाषा उसकी अभिव्यक्ति के माध्यम का संकेत करती है।
- पेंच की चूड़ी मरने का बिंब भाषा के अनावश्यक प्रयोग से अर्थ और प्रभाव नष्ट होने को समझाता है।

चरण 1: चूड़ी मरने का लाक्षणिक अर्थ समझिए पेंच को अनावश्यक रूप से कसते रहने पर उसकी चूड़ियाँ घिस जाती हैं और उसकी पकड़ समाप्त हो जाती है। उसी प्रकार सीधी बात को अधिक प्रभावशाली बनाने के प्रयास में कवि भाषा को जरूरत से अधिक उलटता-पलटता और जटिल बनाता है। इस खींचतान से बात की सहजता, स्पष्टता तथा मूल अर्थ क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। इसी दशा को बात की चूड़ी मर जाना कहा गया है।

चरण 2: बेकार घूमने का आशय बताइए चूड़ी घिस जाने पर पेंच घूमता तो है, पर वस्तु में कसाव पैदा नहीं करता। वैसे ही जटिल शब्दों में उलझी बात भाषा में बार-बार घूमती रहती है, किंतु पाठक तक अपना अभिप्राय नहीं पहुँचा पाती। शब्दों की बाहरी सजावट बचती है, पर कथन की पकड़ और संप्रेषण की शक्ति चली जाती है। कवि इस बिंब द्वारा चमत्कार दिखाने के लिए भाषा को अस्वाभाविक बनाने की प्रवृत्ति की आलोचना करता है।

चरण 3: निष्कर्ष बात की चूड़ी मरने और बेकार घूमने का अर्थ है अनावश्यक भाषाई जटिलता के कारण कथन की सहजता, अर्थ की स्पष्टता और प्रभाव का नष्ट हो जाना।

त्वरित सुझाव: पेंच के घूमने और कसने का अंतर याद रखिए: शब्द मौजूद रह सकते हैं, फिर भी कथन पाठक तक अपना अर्थ पहुँचाने में असफल हो सकता है।

8(ख). काव्यांश में प्रयुक्त दोनों उपमाओं के प्रयोग-सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा में समान गुण के आधार पर एक वस्तु की तुलना दूसरी वस्तु से की जाती है।
- 'कील की तरह' और 'एक शरारती बच्चे की तरह' उपमाएँ अमूर्त बात को परिचित अनुभवों से जोड़ती हैं।

चरण 1: कील की उपमा का सौंदर्य समझिए पहली उपमा में कवि बात को 'कील की तरह' ठोंक देता है। भाषा में उलझकर बात की चूड़ी मर जाती है, इसलिए उसे सहज ढंग से कसना संभव नहीं रहता। कील की तरह ठोंकना कथन को जबरदस्ती किसी तरह पूरा कर देने का बिंब है। इससे स्पष्ट होता है कि बाहर से अभिव्यक्ति ठीक दिखने पर भी उसके भीतर अर्थ का कसाव और प्रभाव नहीं बचा। साधारण कील का उदाहरण इस रचनात्मक असफलता को सजीव बनाता है।

चरण 2: शरारती बच्चे की उपमा का सौंदर्य समझिए दूसरी उपमा में बात को 'एक शरारती बच्चे की तरह' कवि से खेलते हुए दिखाया गया है। यह तुलना बात की सहजता, चंचलता और खिलंदड़ेपन को उभारती है। बच्चा सहज व्यवहार से वश में आता है; उसी तरह बात भी भाषा के स्वाभाविक प्रयोग से स्पष्ट होती है। कवि की थकान के सामने बात का सरल प्रश्न उसकी अनावश्यक भाषाई कसरत पर हल्का व्यंग्य करता है।

चरण 3: निष्कर्ष कील की उपमा अभिव्यक्ति को जबरन पूरा करने की निष्फलता दिखाती है, जबकि शरारती बच्चे की उपमा बात की सहज, चंचल प्रकृति को उभारती है। दोनों उपमाएँ कविता के संदेश को मूर्त और रोचक बनाती हैं।

त्वरित सुझाव: दोनों उपमाओं के लिए तुलना और प्रभाव अलग-अलग लिखिए: कील से जबरदस्ती का भाव और बच्चे से सहज चंचलता का भाव जोड़िए।

8(ग). भाषा को सहूलियत से बरतने से क्या अभिप्राय है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा भाव और विचार के संप्रेषण का माध्यम है; उसका प्रयोग कथ्य के अनुरूप होना चाहिए।
- सहूलियत का अर्थ सहजता और स्वाभाविकता है, जिससे अभिप्राय स्पष्ट बना रहता है।

चरण 1: सहूलियत का अर्थ स्पष्ट कीजिए भाषा को सहूलियत से बरतने का अर्थ है भाव के अनुकूल सरल, सहज और स्वाभाविक शब्दों का प्रयोग करना। बात जैसी है, उसे उसी स्पष्टता से व्यक्त किया जाए, ताकि पाठक या श्रोता उसके मर्म तक पहुँच सके। भाषा पर कृत्रिम दबाव डालकर सामान्य कथन को अनावश्यक रूप से पेचीदा नहीं बनाना चाहिए। यहाँ सहज भाषा का आशय असावधानी या भाव की उपेक्षा नहीं, बल्कि उसकी सटीक अभिव्यक्ति है।

चरण 2: कविता के प्रसंग से अर्थ जोड़िए कवि सीधी बात को प्रभावशाली बनाने की कोशिश में भाषा के दाँव-पेंच में उलझ जाता है। परिणामस्वरूप बात की पकड़ और ताकत घट जाती है। अंत में बात स्वयं उसे याद दिलाती है कि भाषा को सहज ढंग से बरतने पर यह कठिनाई न आती। इस प्रसंग से स्पष्ट है कि शब्दों के प्रदर्शन की जगह कथ्य को प्राथमिकता देनी चाहिए। अच्छी अभिव्यक्ति वह है जिसमें भाषा अर्थ को उजागर करे और बात का स्वाभाविक प्रवाह बना रहे।

चरण 3: निष्कर्ष भाषा को सहूलियत से बरतना भावानुकूल, स्पष्ट और सहज अभिव्यक्ति करना है, जिससे भाषा की कृत्रिम जटिलता के कारण बात का मूल अर्थ और प्रभाव नष्ट न हों।

त्वरित सुझाव: उत्तर में 'सरल भाषा' लिखकर न रुकें; यह भी स्पष्ट कीजिए कि सहज भाषा भाव को सही ढंग से पाठक तक पहुँचाने में कैसे सहायक है।

9(क). निम्नलिखित में से किसी दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: क्रांति की गर्जना का शोषक वर्ग पर क्या प्रभाव पड़ता है? उनका मुख ढाँपना किस मानसिकता का द्योतक है? 'बादल राग' कविता के आधार पर उत्तर दीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'बादल राग' में बादल क्रांति और सामाजिक परिवर्तन का प्रतीक है; उसकी गर्जना शोषणकारी व्यवस्था को चुनौती देती है।
- क्रांति का प्रभाव वर्गों के हितों के अनुसार भिन्न है: पीड़ित जन उससे आशा रखते हैं, जबकि शोषक अपने विशेषाधिकारों के विनाश से डरते हैं।

चरण 1: शोषक वर्ग पर प्रभाव बताइए क्रांति की गर्जना सुनकर शोषक पूँजीपति वर्ग भयभीत हो उठता है। उसे लगता है कि जनता का विद्रोह उसकी संचित संपत्ति, वैभव और सत्ता को छीन लेगा। उसकी सुख-सुविधाएँ दूसरों के शोषण पर टिकी हैं, इसलिए परिवर्तन की आहट उसे विनाश का संकेत लगती है। कविता में संपन्न लोगों के भय तथा धन को पकड़े रहने की स्थिति से उनकी असुरक्षा स्पष्ट होती है। क्रांति उनके आराम और निश्चिंत जीवन को हिला देती है।

चरण 2: मुख ढाँपने की मानसिकता समझाइए मुख ढाँपना उनके भय, कायरता और वास्तविकता से मुँह चुराने का द्योतक है। वे सामाजिक अन्याय समाप्त करने या परिवर्तन का सामना करने के बजाय उससे छिपना चाहते हैं। उनका ध्यान जनता की पीड़ा पर नहीं, अपने धन और सुखों को बचाने पर केंद्रित है। इस कारण मुख ढाँपने में उनकी स्वार्थपूर्ण मानसिकता तथा भीतर की दुर्बलता भी प्रकट होती है। बाहरी समृद्धि उन्हें नैतिक साहस नहीं दे पाती।

चरण 3: काव्य के वर्गगत विरोध को जोड़िए जिस गर्जना से शोषक आतंकित हैं, वही शोषित जन के लिए मुक्ति की आशा है। यह विरोध बताता है कि बादल का गर्जन केवल प्राकृतिक घटना नहीं है। वह अन्यायपूर्ण सामाजिक संबंधों में बदलाव का प्रतीक है। शोषक वर्ग का भय उसकी शोषण पर निर्भर स्थिति को उजागर करता है।

चरण 4: निष्कर्ष क्रांति की गर्जना शोषक वर्ग को धन, सत्ता और सुख खोने की आशंका से आतंकित करती है। उनका मुख ढाँपना भय, कायरता, स्वार्थ और परिवर्तन की वास्तविकता से पलायन की मानसिकता का द्योतक है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दोनों हिस्से अलग रखिए: पहले धन और सत्ता खोने का भय बताइए, फिर मुख ढाँपने को कायरता तथा वास्तविकता से पलायन से जोड़िए।

9(ख). 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में निहित व्यंग्य को उजागर कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता में व्यंग्य का लक्ष्य दूसरों की पीड़ा को प्रदर्शन की सामग्री बनाने वाली संचार-माध्यमों की संवेदनहीनता है।
- सामाजिक उद्देश्य का दावा करने वाले कार्यक्रम की वास्तविकता उसके संचालक के प्रश्नों और व्यवहार से खुलती है।

चरण 1: संचालक के व्यवहार में विरोधाभास पहचानिए कार्यक्रम बनाने वाले स्वयं को समर्थ और सामने बैठे व्यक्ति को कमज़ोर मानते हैं। वे उसकी कठिनाइयों को समझकर सहायता करने के स्थान पर बार-बार उसके अपाहिजपन और दुख का अनुभव पूछते हैं। उनका उद्देश्य उसकी गरिमा की रक्षा करना नहीं, ऐसी प्रतिक्रिया प्राप्त करना है जिसे कैमरे पर प्रभावशाली बनाया जा सके। यही व्यवहार उनकी घोषित सहानुभूति का खोखलापन उजागर करता है।

चरण 2: करुणा के प्रदर्शन पर व्यंग्य स्पष्ट कीजिए संचालक प्रश्नों और संकेतों से पीड़ित व्यक्ति को रोने की ओर धकेलता है। कैमरे पर उसकी आँखों और होंठों की बेचैनी दिखाकर दर्शकों को भी भावुक करने की योजना बनती है। इस तरह एक मनुष्य का निजी दुख सार्वजनिक तमाशे में बदल जाता है। कार्यक्रम की सफलता मानवीय सहायता से नहीं, उसके और दर्शकों के रो पड़ने से आँकी जा रही है।

चरण 3: सामाजिक उद्देश्य के दावे का अर्थ समझिए कविता के अंत में कार्यक्रम को सामाजिक उद्देश्य से युक्त बताकर धन्यवाद दिया जाता है। यह औपचारिक भाषा और पहले दिखी क्रूर संवेदनहीनता मिलकर तीखा व्यंग्य रचती हैं। कवि ऐसे मीडिया-व्यवहार को कठघरे में खड़ा करता है जिसमें दुखी व्यक्ति साधन बन जाता है और उसकी वास्तविक समस्या पीछे छूट जाती है।

चरण 4: निष्कर्ष कविता का व्यंग्य पीड़ित व्यक्ति पर नहीं, उसके दुख का भावुक प्रदर्शन करने वाली मीडिया की मानसिकता पर है। दिखावटी करुणा और सामाजिक सेवा के आवरण में छिपी अमानवीयता इसका केंद्रीय निशाना है।

त्वरित सुझाव: व्यंग्य समझाते समय संचालक का दावा, उसके दबावपूर्ण प्रश्न और पीड़ा को तमाशा बनाने का परिणाम जोड़कर लिखिए।

9(ग). 'फ़िराक़' की रुबाइयों में उभरे घरेलू जीवन के बिंबों का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़िराक़ गोरखपुरी की रुबाइयों में माँ और बच्चे के संबंध तथा पारिवारिक त्योहारों के माध्यम से घरेलू जीवन की आत्मीयता उभरती है।
- बिंब किसी दृश्य, ध्वनि या क्रिया को शब्दों द्वारा सजीव बनाते हैं; यहाँ साधारण घरेलू क्रियाओं में वात्सल्य और सांस्कृतिक सौंदर्य दिखाई देता है।

चरण 1: माँ और बच्चे के वात्सल्यपूर्ण दृश्य समझिए आँगन में माँ का बच्चे को गोद में लेकर उछालना और बच्चे की खिलखिलाहट घर को आनंद से भर देती है। बच्चे की हँसी में ध्वनि का और माँ की बाँहों की गति में दृश्य का सुंदर मेल है। इसी तरह नहलाने के बाद उसके उलझे बाल सँवारना, घुटनों के बीच खड़ा करके कपड़े पहनाना माँ की स्नेहभरी देखभाल को मूर्त कर देता है। इन छोटे कार्यों से मातृत्व का सहज सौंदर्य सामने आता है।

चरण 2: बाल-मन और मातृ-स्नेह का संबंध दिखाइए बच्चा आकाश का चाँद पाने की ज़िद करता है तो माँ दर्पण में उसका प्रतिबिंब दिखाकर उसे बहलाती है। इस प्रसंग में बच्चे का भोलापन और माँ की सूझ-बूझ दोनों उभरते हैं। चाँद जैसी दूर की वस्तु भी माँ के स्नेह से बच्चे के घरेलू अनुभव का हिस्सा बन जाती है। इससे कल्पना और वास्तविक जीवन का कोमल संबंध बनता है।

चरण 3: त्योहारों में घरेलू संस्कृति का सौंदर्य देखिए दीपावली पर घर की सजावट और बच्चे के छोटे घरौंदे में माँ का दीया जलाना पारिवारिक उल्लास को जीवंत करता है। रक्षाबंधन में भाई की कलाई पर बहन की राखी स्नेह के सुंदर बंधन का बिंब है। त्योहार यहाँ केवल बाहरी सजावट नहीं, घर के सदस्यों को जोड़ने वाले प्रेम और अपनत्व के अवसर हैं।

चरण 4: निष्कर्ष रुबाइयों के घरेलू बिंबों का सौंदर्य उनकी सहजता, दृश्यात्मकता और आत्मीयता में है। माँ का वात्सल्य, बालक की निश्छलता और त्योहारों का पारिवारिक प्रेम साधारण जीवन को काव्यात्मक गरिमा देते हैं।

त्वरित सुझाव: प्रत्येक बिंब के साथ उसका भाव भी लिखिए: नहलाना और सँवारना वात्सल्य दिखाते हैं, जबकि दीपावली और राखी पारिवारिक आत्मीयता उभारते हैं।

10(क). नीचे दिए गए गद्यांश को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: एक राजनीतिज्ञ पुरुष का बहुत बड़ी जनसंख्या से पाला पड़ता है। अपनी जनता से व्यवहार करते समय, राजनीतिज्ञ के पास न तो इतना समय होता है न प्रत्येक के विषय में इतनी जानकारी ही होती है, जिससे वह सबकी अलग-अलग आवश्यकताओं और क्षमताओं के आधार पर वांछित व्यवहार अलग-अलग कर सके। वैसे भी आवश्यकताओं और क्षमताओं के आधार पर भिन्न व्यवहार कितना भी आवश्यक तथा औचित्यपूर्ण क्यों न हो, 'मानवता' के दृष्टिकोण से समाज को दो वर्गों या श्रेणियों में नहीं बाँटा जा सकता। ऐसी स्थिति में राजनीतिज्ञ को अपने व्यवहार में एक व्यवहार्य सिद्धांत की आवश्यकता रहती है और यह व्यवहार्य सिद्धांत यही होता है, कि सब मनुष्यों के साथ समान व्यवहार किया जाए। राजनीतिज्ञ को व्यवहार्य सिद्धांत की आवश्यकता क्यों रहती है? यह सिद्धांत क्या हो सकता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में व्यवहार्य सिद्धांत का अर्थ ऐसा नियम है जिसे बड़ी जनसंख्या से व्यवहार करते समय व्यवहार में लाया जा सके।

- मनुष्यों की आवश्यकताओं और क्षमताओं की भिन्नता के बावजूद मानवीय समानता सार्वजनिक व्यवहार का आधार है।

चरण 1: सिद्धांत की आवश्यकता का कारण बताइए राजनीतिज्ञ को बहुत बड़ी जनसंख्या के साथ व्यवहार करना पड़ता है। उसके पास इतना समय और प्रत्येक व्यक्ति के विषय में इतनी जानकारी नहीं होती कि वह सबकी अलग-अलग आवश्यकताओं तथा क्षमताओं को पहचानकर प्रत्येक के अनुकूल अलग व्यवहार कर सके। इसलिए उसे ऐसा सामान्य नियम चाहिए जो पूरी जनता के साथ व्यवहार करने में व्यावहारिक रूप से उपयोगी हो।

चरण 2: उपयुक्त सिद्धांत स्पष्ट कीजिए गद्यांश के अनुसार वह व्यवहार्य सिद्धांत है कि सभी मनुष्यों के साथ समान व्यवहार किया जाए। व्यक्तिगत भिन्नताओं के आधार पर पूरी मानवता को अलग-अलग दर्जे देना उचित नहीं है। समान व्यवहार का नियम राजनीतिज्ञ की व्यावहारिक कठिनाई का समाधान करता है और मनुष्य के रूप में सबकी समान गरिमा भी स्वीकार करता है।

चरण 3: निष्कर्ष जनसंख्या की विशालता, समयाभाव और व्यक्तियों की पूरी जानकारी न होने के कारण राजनीतिज्ञ को व्यवहार्य सिद्धांत चाहिए। यह सिद्धांत सब मनुष्यों के साथ समान व्यवहार करना है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दोनों हिस्से अलग रखिए: पहले बड़ी जनसंख्या, समय और जानकारी की सीमा; फिर सबके साथ समान व्यवहार का सिद्धांत लिखिए।

10(ख). राजनीतिज्ञ की विवशता क्या होती है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न राजनीतिज्ञ की उस व्यावहारिक सीमा को पहचानने को कहता है जो बड़ी जनसंख्या से व्यवहार करते समय सामने आती है।
- उत्तर का आधार गद्यांश में बताए गए समयाभाव और प्रत्येक व्यक्ति के विषय में पर्याप्त जानकारी के अभाव का संयुक्त कारण है।

चरण 1: जनसंख्या और समय की समस्या पहचानिए राजनीतिज्ञ का बहुत बड़ी जनसंख्या से पाला पड़ता है। प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताएँ और क्षमताएँ अलग हो सकती हैं। किंतु उसके पास इतना समय नहीं होता कि वह हर व्यक्ति की स्थिति का अलग-अलग अध्ययन कर सके। पूरी जनता से व्यवहार करने की ज़िम्मेदारी के कारण वह प्रत्येक के लिए व्यक्तिगत स्तर पर निर्णय लेने में समर्थ नहीं होता।

चरण 2: जानकारी के अभाव का परिणाम बताइए राजनीतिज्ञ को हर व्यक्ति के विषय में पूरी जानकारी भी नहीं होती। इसलिए वह उसकी विशेष आवश्यकताओं और क्षमताओं के अनुरूप अलग वांछित व्यवहार नहीं कर पाता। यही उसकी विवशता है। गद्यांश इसी कठिनाई के कारण ऐसे व्यवहार्य सिद्धांत की आवश्यकता बताता है जिसे सभी मनुष्यों के साथ व्यवहार करते समय अपनाया जा सके।

चरण 3: निष्कर्ष राजनीतिज्ञ की विवशता यह है कि बड़ी जनसंख्या के प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओं और क्षमताओं को जानने के लिए उसके पास न पर्याप्त समय है, न पूरी जानकारी; इसलिए वह सबके साथ व्यक्ति-विशेष के अनुसार अलग व्यवहार नहीं कर सकता।

त्वरित सुझाव: विवशता के उत्तर में केवल समयाभाव न लिखिए; व्यक्ति की पर्याप्त जानकारी का अभाव और उससे अलग व्यवहार न कर पाने का संबंध भी बताइए।

10(ग). भिन्न व्यवहार मानवता की दृष्टि से उपयुक्त क्यों नहीं होता? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश मानवीय समानता को स्वीकार करता है: अलग आवश्यकताएँ या क्षमताएँ मनुष्यों की गरिमा को अलग-अलग दर्जों में बाँटने का आधार नहीं हैं।

- प्रश्न का उत्तर भिन्न व्यवहार की व्यावहारिक उपयोगिता और मानवता के आधार पर समान व्यवहार की आवश्यकता का अंतर स्पष्ट करता है।

चरण 1: मानवीय समानता का आधार समझिए सभी व्यक्ति मनुष्य होने के नाते समान मानवीय सम्मान के अधिकारी हैं। इसलिए उनकी आवश्यकताओं और क्षमताओं में अंतर होने पर भी समाज को मानवता के स्तर पर दो वर्गों या श्रेणियों में नहीं बाँटा जा सकता। यदि इन भिन्नताओं को मनुष्य की श्रेष्ठता या हीनता का आधार बना दिया जाए, तो समान मानवीय गरिमा का विचार नष्ट हो जाता है।

चरण 2: भिन्न व्यवहार की सीमा स्पष्ट कीजिए गद्यांश यह स्वीकार करता है कि आवश्यकताओं और क्षमताओं के अनुसार अलग व्यवहार कुछ स्थितियों में आवश्यक और औचित्यपूर्ण लग सकता है। फिर भी इस तर्क के आधार पर मनुष्यों के बीच स्थायी ऊँच-नीच या अलग मानवीय दर्जे नहीं बनाए जा सकते। मानवता की दृष्टि से उपयुक्त सामान्य सिद्धांत सबके साथ समान व्यवहार करना है।

चरण 3: निष्कर्ष भिन्न व्यवहार मानवता की दृष्टि से इसलिए उपयुक्त नहीं है कि मनुष्य होने के आधार पर सभी समान हैं। आवश्यकताओं या क्षमताओं के अंतर से समाज को अलग मानवीय दर्जों वाली श्रेणियों में बाँटना उचित नहीं होता।

त्वरित सुझाव: उत्तर में यह अंतर बनाए रखिए: व्यक्तिगत आवश्यकताएँ अलग हो सकती हैं, पर उनके आधार पर किसी मनुष्य की गरिमा कम या अधिक नहीं हो जाती।

10(घ). समाज के दो वर्गों से क्या तात्पर्य है? वर्गानुसार भिन्न व्यवहार औचित्यपूर्ण क्यों नहीं होता? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डॉ. आंबेडकर मानवता के आधार पर सभी मनुष्यों की समान गरिमा और समान व्यवहार का समर्थन करते हैं।
- व्यक्तियों की आवश्यकताओं और क्षमताओं में अंतर होने पर भी उन्हें स्थायी रूप से ऊँची और नीची श्रेणियों में नहीं बाँटा जा सकता।

चरण 1: दो वर्गों का संदर्भ समझें गद्यांश में समाज के दो वर्गों से आशय आवश्यकताओं और क्षमताओं के आधार पर बनाई जाने वाली भिन्न श्रेणियों से है। कोई व्यक्ति अधिक सक्षम और कोई कम सक्षम हो सकता है। इन अंतरों के आधार पर एक वर्ग को श्रेष्ठ तथा दूसरे को हीन मानना मनुष्यों का अनुचित वर्गीकरण होगा। यहाँ किसी विशेष जाति या आर्थिक वर्ग का नाम नहीं दिया गया है।

चरण 2: भिन्न व्यवहार के अनौचित्य को स्पष्ट करें सामर्थ्य में अंतर होने से मनुष्य होने का अधिकार और सम्मान बदल नहीं जाता। मानवता की दृष्टि से सभी समान हैं। अत: वर्ग के आधार पर किसी को सम्मान या अवसर देना और किसी को उनसे वंचित रखना औचित्यपूर्ण नहीं है। राजनीतिज्ञ के लिए भी सबके साथ समान व्यवहार करना ही व्यावहारिक सद्वृत्ति है।

चरण 3: निष्कर्ष दो वर्गों का आशय क्षमता और आवश्यकता के आधार पर बनाई गई श्रेणियों से है। मानवता और समान गरिमा के कारण वर्गानुसार भेदभावपूर्ण व्यवहार उचित नहीं है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में गद्यांश के "आवश्यकताओं और क्षमताओं तथा "मानवता को जोड़ें; अपनी ओर से किसी जाति या वर्ग का नाम न जोड़ें।

अथवा

10(क). अथवा (बाज़ार दर्शन गद्यांश पर आधारित प्रश्न): बाज़ार के जादू को रूप का जादू क्यों कहा गया है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जैनेंद्र कुमार के अनुसार बाज़ार का आकर्षण मुख्यत: वस्तुओं के बाहरी रूप और सजावट से पैदा होता है।
- वस्तु की उपयोगिता और उसका दिखावटी आकर्षण अलग बातें हैं; चमक देखकर अनावश्यक खरीद की इच्छा भी जाग सकती है।

चरण 1: जादू के माध्यम को पहचानें बाज़ार में सुंदर ढंग से सजी वस्तुएँ, उनकी चमक और रंगीन रूप-सज्जा ग्राहक की आँखों को

आकर्षित करते हैं। यह प्रभाव पहले देखने से पैदा होता है। इसलिए लेखक बाज़ार के जादू को आँख की राह काम करने वाला रूप का जादू कहते हैं।

चरण 2: रूप से उत्पन्न इच्छा समझें आकर्षक वस्तुओं को देखकर व्यक्ति को लगने लगता है कि उसे बहुत-सी चीज़ें चाहिए। वह अपनी वास्तविक जरूरत पर विचार करने के बजाय वस्तु के सुंदर रूप से प्रभावित हो सकता है। इस प्रकार बाहरी सौंदर्य उसकी इच्छा को बाँध लेता है और खरीदने की लालसा पैदा करता है। जादू का संबंध इसी दृश्य मोह से है, किसी अलौकिक शक्ति से नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार का जादू आँखों के माध्यम से वस्तुओं के सुंदर बाहरी रूप का आकर्षण जगाता है; इसी कारण उसे रूप का जादू कहा गया है।

त्वरित सुझाव: "रूप का जादू समझाते समय क्रम रखें: सुंदर सजी वस्तुएँ, आँखों पर प्रभाव, फिर खरीदने की इच्छा।

10(ख). बाज़ार के जादू की मर्यादा स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यहाँ मर्यादा का अर्थ बाज़ार के प्रभाव की सीमा है; उसका आकर्षण सभी व्यक्तियों पर समान रूप से काम नहीं करता।
- मन की स्थिति और अपनी आवश्यकताओं की स्पष्ट पहचान तय करती है कि व्यक्ति बाहरी आकर्षण से कितना प्रभावित होगा।

चरण 1: मर्यादा का अर्थ खोलें जैसे चुंबक हर वस्तु को अपनी ओर नहीं खींचता, वैसे ही बाज़ार की चमक हर मनुष्य को अपने मोह में नहीं बाँध सकती। उसका जादू विशेष रूप से उस मन पर चलता है जो खाली है और जिसे अपनी जरूरतों की स्पष्ट समझ नहीं है। जेब भरी हो तो ऐसी स्थिति में उसका प्रभाव अधिक हो जाता है।

चरण 2: प्रभाव की सीमा स्पष्ट करें जिस व्यक्ति का मन भरा है और जो जानता है कि उसे क्या खरीदना है, वह बाज़ार की प्रत्येक वस्तु की ओर नहीं लपकता। उसके लिए उपयोगी वस्तु का महत्त्व है, मात्र दिखावे का नहीं। इसीलिए बाजार का आकर्षण सर्वशक्तिमान नहीं है। आवश्यकता का बोध और मन की संतुष्टि उसकी शक्ति को सीमित कर देते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार के जादू की मर्यादा यह है कि वह खाली और अनिश्चित मन को लुभाता है; अपनी जरूरत जानने वाले संतुष्ट व्यक्ति पर उसका वश नहीं चलता।

त्वरित सुझाव: "मर्यादा को नैतिक नियम न समझें; यहाँ चुंबक की उपमा से जादू के सीमित प्रभाव को स्पष्ट करें।

10(ग). बाज़ार का जादू किस प्रकार के लोगों को लुभाता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार का मोह व्यक्ति की मानसिक रिक्तता और अनिश्चित इच्छाओं से जुड़ा है।
- पैसा खरीद की सुविधा देता है, किंतु आकर्षण में फँसने का मुख्य कारण अपनी आवश्यकताओं का स्पष्ट बोध न होना है।

चरण 1: लुभाए जाने वाले लोगों को पहचानें बाज़ार का जादू उन लोगों को लुभाता है जिनका मन खाली होता है। वे यह तय करके नहीं आते कि उन्हें वास्तव में किस चीज़ की जरूरत है। इसलिए सजी हुई वस्तुएँ देखकर उनकी इच्छाएँ एक वस्तु से दूसरी वस्तु की ओर दौड़ने लगती हैं। वे हर आकर्षक चीज़ को अपने लिए आवश्यक समझ सकते हैं।

चरण 2: जेब और मन का संबंध समझें मन खाली होने के साथ जेब भरी हो तो बाज़ार का जादू खूब प्रभाव डालता है, क्योंकि इच्छा के साथ खरीदने की क्षमता भी होती है। किंतु जेब खाली होने पर भी खाली मन में वस्तुओं के लिए लालसा पैदा हो सकती है। इसलिए केवल धनवान होना निर्णायक नहीं है; असली बात मन का खाली और जरूरतों के प्रति अस्पष्ट होना है।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार का जादू मुख्यतः खाली मन और अनिश्चित आवश्यकताओं वाले लोगों को लुभाता है। भरी जेब उसके प्रभाव को और बढ़ा देती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में "मन खाली को मुख्य शर्त और "जेब भरी को प्रभाव बढ़ाने वाली स्थिति के रूप में रखें।

10(घ). इस जादू के बंधन से बचने का क्या उपाय हो सकता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार का सही उपयोग अपनी वास्तविक आवश्यकता की पूर्ति करना है, प्रदर्शन या अनावश्यक संग्रह करना नहीं।
- सजग और संतुष्ट मन वस्तुओं की बाहरी चमक से प्रभावित हुए बिना उपयोगिता के आधार पर चुनाव करता है।

चरण 1: मन को खाली न रखने का अर्थ समझें इस जादू से बचने के लिए व्यक्ति को मन खाली लेकर बाज़ार नहीं जाना चाहिए। मन भरा होने का अर्थ है कि उसे अपने उद्देश्य और जरूरत का स्पष्ट ज्ञान हो। केवल कोई भी इच्छा मन में भर लेना उपाय नहीं है; उसे समझना चाहिए कि कौन-सी वस्तु वास्तव में उसके काम की है।

चरण 2: खरीद में विवेक अपनाएँ बाज़ार जाने से पहले आवश्यक वस्तुओं का निश्चय करना और उन्हीं पर ध्यान रखना उपयोगी है। वस्तु की सुंदर सजावट देखकर उसे आवश्यक न मानें। जब व्यक्ति संतोष तथा संयम से काम लेता है, तब बाज़ार उसके जीवन की जरूरत पूरी करता है। इस स्थिति में दूसरों की वस्तुएँ देखकर अभाव या ईर्ष्या का अनुभव उसे अनावश्यक खरीद की ओर नहीं धकेलता।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार के जादू से बचने का उपाय है अपनी आवश्यकताओं का स्पष्ट बोध, संतुष्ट मन और विवेकपूर्ण खरीद; मन खाली लेकर बाज़ार न जाएँ।

त्वरित सुझाव: बचाव का उपाय बताते समय "मन भरा का अर्थ स्पष्ट करें और उसे केवल आवश्यक वस्तुओं की खरीद से जोड़ें।

11(क). निम्नलिखित में से किसी चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए: चार्ली चैपलिन कौन था? उसके 'भारतीयकरण' से लेखक का क्या आशय है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विष्णु खरे का पाठ चार्ली चैपलिन की लोकप्रियता को साधारण मनुष्य के दुःख, संघर्ष और हास्य के मेल से समझाता है।
- चार्ली का भारतीयकरण उसकी अभिनय-दृष्टि और हास्य-करुणा के मेल को भारतीय पात्रों तथा परिस्थितियों में अपनाना है।

चरण 1: चार्ली चैपलिन का परिचय दें चार्ली चैपलिन विश्वप्रसिद्ध हास्य अभिनेता, फिल्मकार और मूक फिल्मों के महान कलाकार थे। उनका साधारण, संघर्षशील पात्र अपनी असफलताओं और विचित्र स्थितियों के कारण दर्शक को हँसाता भी है और करुणा से भर भी देता है। इसी मानवीयता के कारण विभिन्न देशों और भाषाओं के लोग उनसे अपने को जोड़ पाते हैं।

चरण 2: भारतीयकरण का आशय स्पष्ट करें लेखक के अनुसार चार्ली का भारतीयकरण तब हुआ जब भारतीय फिल्मों ने उनकी शैली को अपनी सामाजिक परिस्थितियों और नायक के स्वभाव में ढाला। विशेष रूप से राज कपूर ने भारतीय नायक को स्वयं पर हँसने और अपनी कमजोरियों को हास्य के साथ प्रस्तुत करने की जगह दी। उनकी फिल्मों "आवारा और "श्री 420 में साधारण, अभावग्रस्त मनुष्य की करुणा तथा हास्य का मेल दिखाई देता है।

चरण 3: कलात्मक प्रभाव और नकल में अंतर करें यह भारतीयकरण केवल चार्ली जैसे कपड़े पहनना या उनकी चाल की नकल करना नहीं है। इसका महत्त्व भारतीय जीवन में संघर्ष करते आम आदमी को केंद्र में रखना और उसके दुःख को हास्य के माध्यम से व्यक्त करना है। इससे नायक केवल गंभीर तथा आदर्श छवि तक सीमित नहीं रहता, बल्कि अपनी कमियों सहित दर्शक के अधिक निकट आता है।

चरण 4: निष्कर्ष चार्ली चैपलिन महान हास्य अभिनेता और फिल्मकार थे। उनके भारतीयकरण से आशय, विशेषतः राज कपूर द्वारा, उनकी हास्य-करुणा और स्वयं पर हँस सकने वाली नायक-दृष्टि को भारतीय जीवन में ढालना है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दोनों हिस्से अलग रखें: पहले चार्ली का परिचय, फिर राज कपूर तथा "आवारा और "श्री 420 से भारतीयकरण की व्याख्या करें।

11(ख). 'भक्तिन अच्छी है पर उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं।' इस कथन के समर्थन में तीन तर्क दीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महादेवी वर्मा के रेखाचित्र 'भक्तिन' में सेवा, निष्ठा और आत्मीयता से युक्त एक ऐसी स्त्री का चित्र है जिसमें सामान्य मानवीय दुर्बलताएँ भी हैं।
- चरित्र की समीक्षा में किसी दुर्गुण का नाम देने के साथ पाठ का वह व्यवहार भी बताना चाहिए जिससे वह दुर्गुण स्पष्ट होता है।

चरण 1: पैसे छिपाने की आदत स्पष्ट कीजिए भक्तिन लेखिका के इधर-उधर पड़े रुपये-पैसे उठाकर भंडारघर की मटकी में छिपा देती थी। टोके जाने पर वह इसे चोरी मानने के बजाय अपने घर का पैसा सँभालकर रखना बताती थी। इस प्रकार वह बिना बताए पैसे रखने की अपनी आदत को तर्क देकर उचित सिद्ध करती थी।

चरण 2: बात बदलकर बताने की प्रवृत्ति समझिए भक्तिन हमेशा पूरा सच नहीं बताती थी। जिस बात से लेखिका को क्रोध आ सकता था, उसे वह बदलकर या इधर-उधर करके कहती थी। उसका तर्क था कि लेखिका को प्रसन्न रखना उसका कर्तव्य है, इसलिए ऐसा करना झूठ नहीं है। सेवा का उद्देश्य होने पर भी तथ्य बदलकर कहना उसकी सत्य से बचने की प्रवृत्ति दिखाता है।

चरण 3: अपने पक्ष में शास्त्र गढ़ने की हठधर्मिता पहचानिए लेखिका को स्त्रियों का सिर घुटाना अच्छा नहीं लगता था, किंतु भक्तिन अपनी इस आदत को छोड़ने के लिए तैयार नहीं थी। उसे उचित सिद्ध करने के लिए वह शास्त्र का सहारा लेती थी और ऐसा प्रमाण प्रस्तुत करती थी जिसका वास्तविक आधार स्पष्ट नहीं था। अपनी रूढ़ मान्यता को बचाने के लिए तर्क गढ़ना और परिवर्तन स्वीकार न करना उसका एक और दुर्गुण था।

चरण 4: निष्कर्ष पैसे छिपाना, बात बदलकर कहना और अपनी रूढ़ आदतों के समर्थन में तर्क अथवा शास्त्रीय प्रमाण गढ़ना भक्तिन के तीन दुर्गुण हैं। उसकी निष्ठा और सेवाभाव इन कमजोरियों के साथ ही उपस्थित हैं।

त्वरित सुझाव: तीन तर्क माँगे गए हैं, इसलिए प्रत्येक दुर्गुण के साथ एक अलग पाठगत उदाहरण लिखिए; केवल विशेषणों की सूची देने से चरित्र की पुष्टि नहीं होगी।

11(ग). 'काले मेघा पानी दे' के आधार पर लिखिए कि जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को किस प्रकार सही ठहराया। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- धर्मवीर भारती के संस्मरण 'काले मेघा पानी दे' में लेखक के तार्किक दृष्टिकोण और जीजी की लोक-आस्था का संवाद प्रस्तुत हुआ है।
- जीजी इंदर सेना पर पानी डालने को त्याग, दान और वर्षा की कामना से जोड़कर सही ठहराती हैं। उनके तर्क को उनके विश्वास के रूप में समझना चाहिए।

चरण 1: लेखक की आपत्ति का संदर्भ समझिए सूखे के समय पानी का घोर अभाव था। ऐसे में इंदर सेना के लड़कों पर बाल्टियों से पानी डालना लेखक को पानी की बरबादी लगता था। जीजी ने इसके उत्तर में कहा कि किसी चीज़ की कमी के समय उसका दान करना ही वास्तविक त्याग है। जो वस्तु बहुत अधिक हो, उसमें से थोड़ा दे देना उतना कठिन नहीं होता।

चरण 2: दान और इंद्र की प्रसन्नता का संबंध बताइए जीजी के अनुसार पानी की कमी के बावजूद उसे देना मनुष्य के त्याग को प्रकट करता है। इंदर सेना पर पानी डालकर लोग वर्षा के देवता इंद्र को अर्घ्य चढ़ाते हैं। उनकी आस्था थी कि ऐसा त्याग देखकर इंद्र प्रसन्न होंगे और वर्षा करके धरती को जल देंगे। इसलिए वे इस प्रथा को व्यर्थ पानी बहाना नहीं मानती थीं।

चरण 3: किसान और बीज का उदाहरण स्पष्ट कीजिए जीजी ने समझाया कि किसान अच्छी फसल पाने के लिए अपने पास के कुछ अनाज को बीज बनाकर खेत में डालता है। यदि वह उसे बचाकर ही रखे, तो नई फसल नहीं मिल सकती। उसी प्रकार थोड़ा पानी देना उनकी दृष्टि में पानी की बुआई थी, जिसके बदले बहुत-सी वर्षा मिलने की आशा थी। इस उदाहरण से उन्होंने पाने से पहले देने की आवश्यकता पर बल दिया।

चरण 4: निष्कर्ष जीजी ने अभाव में किए गए दान का महत्त्व, इंद्र को अर्घ्य देकर प्रसन्न करने की लोक-आस्था और किसान की बीज-बुआई का उदाहरण देकर इंदर सेना पर पानी फेंकना उचित ठहराया।

त्वरित सुझाव: उत्तर का क्रम 'अभाव में त्याग', 'इंद्र को अर्घ्य' और 'बीज बोकर फसल पाना' रखिए; वर्षा होने की बात जीजी की आस्था के रूप में लिखिए।

11(घ). लुट्टन के राज पहलवान लुट्टन सिंह बन जाने के बाद की दिनचर्या पर प्रकाश डालिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी 'पहलवान की ढोलक' में राजाश्रय मिलने के बाद लुट्टन का जीवन सम्मान, पर्याप्त भोजन और कुश्ती के अभ्यास से जुड़ जाता है।
- प्रश्न उसके राज पहलवान बनने के बाद के सुख-चैन भरे जीवन का वर्णन माँगता है; उत्तर में उसकी रहन-सहन, लोकप्रियता और दैनिक अभ्यास के उदाहरण आवश्यक हैं।

चरण 1: राजाश्रय और कुश्ती के अभ्यास का वर्णन कीजिए चाँद सिंह को हराने के बाद राजा साहब ने लुट्टन को अपने दरबार में रख लिया। अब उसे पौष्टिक भोजन और राजा की स्नेहपूर्ण देखरेख मिलने लगी। वह नियमित कसरत और कुश्ती करता था। इस सुविधा और प्रोत्साहन से उसकी शक्ति तथा कुशलता बढ़ी और उसने अनेक प्रसिद्ध पहलवानों को हराकर अपना नाम दूर-दूर तक फैला दिया।

चरण 2: मेले में उसकी मस्ती और प्रतिष्ठा बताइए राज पहलवान के रूप में लुट्टन लोगों के आकर्षण का केंद्र बन गया था। मेले में वह घुटनों तक लंबा चोगा और अस्त-व्यस्त पगड़ी पहनकर मस्त हाथी की तरह घूमता था। दुकानदार उसका आदर करते थे। हलवाई उसे बुलाकर मिठाई खिलाते और वह बालकों जैसी सहज हँसी के साथ बैठकर भरपेट खाता था। उसके व्यवहार में अपनी प्रतिष्ठा का भरोसा और जीवन का आनंद दिखाई देता था।

चरण 3: पुत्रों के प्रशिक्षण की चर्चा कीजिए लुट्टन अपने दोनों पुत्रों को भी पहलवानी सिखाता था। वह प्रातःकाल ढोल बजाकर उन्हें कसरत कराता और ढोल की आवाज़ पर ध्यान देना सिखाता था। वह ढोल को अपना गुरु मानता था, इसलिए चाहता था कि उसके पुत्र भी उसकी ताल से दाँव-पेंच और संघर्ष की प्रेरणा लें। इस प्रकार उसका समय अपनी कला के अभ्यास और उसे अगली पीढ़ी तक पहुँचाने में बीतता था।

चरण 4: निष्कर्ष राज पहलवान बनने के बाद लुट्टन का जीवन पौष्टिक भोजन, कसरत, कुश्ती, मेलों में सम्मानपूर्वक घूमने तथा पुत्रों को पहलवानी सिखाने में सुख-चैन से बीतने लगा।

त्वरित सुझाव: दिनचर्या के उत्तर में भोजन और अभ्यास, मेले की वेशभूषा तथा पुत्रों का प्रशिक्षण जोड़िए; राजा की मृत्यु के बाद की विपत्ति इस प्रश्न का मुख्य विषय नहीं है।

11(ङ). ‘’नमक’ कहानी में भारत-पाक के बीच आरोपित भेदभाव के बीच मुहब्बत का नमकीन स्वाद है।’ इस कथन की समीक्षा कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रज़िया सज्जाद ज़हीर की कहानी ‘नमक’ राजनीतिक सीमाओं के पार बनी रहने वाली मानवीय आत्मीयता और जन्मभूमि के प्रति लगाव को व्यक्त करती है।
- नमक कहानी में केवल खाने की वस्तु नहीं, बल्कि वतन की स्मृति, अपनत्व और साझा संवेदना का प्रतीक बन जाता है।

चरण 1: सिख बीबी और सफ़िया के संबंध को समझिए भारत में रहने वाली सिख बीबी विभाजन के बाद भी लाहौर को अपना वतन मानती हैं। वे सफ़िया से लाहौरी नमक लाने को कहती हैं। उनकी इस छोटी-सी इच्छा में अपने पुराने घर और परिवेश के प्रति गहरा प्रेम छिपा है। सफ़िया भी उनकी भावना का आदर करती है और नमक लाने का प्रयास करती है। अलग धर्म और देश की पहचान दोनों की आत्मीयता में बाधा नहीं बनती।

चरण 2: सीमा के नियम और कस्टम अधिकारी का व्यवहार देखिए सीमा पर नमक ले जाने के नियम सफ़िया के सामने कठिनाई पैदा करते हैं। किंतु पाकिस्तानी कस्टम अधिकारी सिख बीबी की भावना जानकर नमक ले जाने में सहायता करता है। वह स्वयं देहली को अपना वतन मानता है। इससे स्पष्ट होता है कि सरकारी सीमाएँ बनने के बाद भी मनुष्य की स्मृतियाँ और संबंध अपनी पुरानी धरती से जुड़े रहते हैं।

चरण 3: दूसरी ओर दिखाई देने वाली समान संवेदना बताइए भारतीय कस्टम अधिकारी भी सफ़िया की बात समझता है और अपने पुराने वतन ढाका को आत्मीयता से याद करता है। दोनों ओर के अधिकारियों के अनुभव एक जैसी मानवीय पीड़ा और अपनापन उजागर करते हैं। कहानी देश-विभाजन और प्रशासनिक प्रतिबंधों के बीच ऐसे मनुष्यों को सामने लाती है जो दूसरे की भावनाओं को पहचानकर सहयोग करते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कथन सार्थक है क्योंकि लाहौरी नमक सिख बीबी, सफ़िया और दोनों देशों के अधिकारियों को प्रेम तथा वतन की याद के सूत्र में जोड़ता है। आरोपित भेदभाव के बीच यह साझा आत्मीयता ही ‘मुहब्बत का नमकीन स्वाद’ है।

त्वरित सुझाव: समीक्षा में केवल भाईचारे की बात न लिखिए; सिख बीबी का लाहौर, पाकिस्तानी अधिकारी की देहली और भारतीय अधिकारी का ढाका याद करके तीन पाठगत आधार दीजिए।

12(क). निम्नलिखित में से किसी दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: अपने निवास के निकट पहुँचकर वाई.डी. पंत को क्यों लगा कि वे किसी ग़लत जगह पर आ गए हैं? पूरे आयोजन में उनकी मनःस्थिति पर प्रकाश डालिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी में यशोधर बाबू के पारंपरिक संस्कारों और उनके परिवार की आधुनिक जीवनशैली का अंतर उभरता है।
- रजत-जयंती का आयोजन उनके अपने घर में होता है, फिर भी उसके तौर-तरीके उन्हें अपरिचित लगते हैं; इसी से उनका मानसिक अकेलापन स्पष्ट होता है।

चरण 1: घर के बदले दृश्य को समझिए अपने निवास के निकट पहुँचकर यशोधर बाबू ने वहाँ गाड़ियों, मेहमानों और उत्सव की चहल-पहल का असामान्य दृश्य देखा। उन्हें इस आयोजन की पहले से जानकारी नहीं थी। उनके साधारण घरेलू वातावरण के स्थान पर आधुनिक ढंग की दावत चल रही थी। इसलिए क्षण भर के लिए उन्हें लगा कि वे किसी गलत जगह आ गए हैं। वास्तव में बच्चे उनके विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ मना रहे थे।

चरण 2: आयोजन में उनकी असहजता पहचानिए यशोधर बाबू विवाह की वर्षगाँठ को इस प्रकार मनाने और उस पर खर्च करने को अपने संस्कारों के अनुकूल नहीं पाते। केक, उपहार, आधुनिक पहनावे तथा उत्सव के पूरे ढंग से वे सहज आत्मीयता नहीं जोड़ पाते। पत्नी और

बच्चे नए वातावरण में प्रसन्न हैं, जबकि वे अपने ही परिवार में अलग-थलग पड़ते दिखाई देते हैं। पुरानी स्मृतियाँ और किशनदा के संस्कार उनके मन में बने रहते हैं।

चरण 3: उपहार से जुड़े भाव को स्पष्ट कीजिए बेटे के दिए ड्रेसिंग गाउन में उन्हें स्नेह की संभावना दिखती है, किंतु उसे सुबह दूध लेने जाते समय पहनने की बात उन्हें भीतर से छूती है। वे चाहते हैं कि बेटा उनके आराम की चिंता करते हुए स्वयं दूध लाने की जिम्मेदारी ले। इस प्रसंग में उनका भावुक मन केवल वस्तु नहीं, अपनापन और देखभाल चाहता है।

चरण 4: निष्कर्ष अपरिचित उत्सवी दृश्य से उन्हें गलत स्थान पर पहुँचने का भ्रम हुआ। पूरे आयोजन में वे आश्चर्य, संकोच, असहजता और आत्मीयता की चाह के बीच झूलते रहे; परिवार के साथ रहते हुए भी पीढ़ियों का अंतर उन्हें अकेला करता रहा।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले घर का बदला दृश्य लिखें, फिर आयोजन की असहजता और ड्रेसिंग गाउन वाले प्रसंग से उनकी भावनात्मक अपेक्षा स्पष्ट करें।

12(ख). 'जूझ' कहानी में चित्रित ग्रामीण जीवन का संक्षिप्त वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव के आत्मकथात्मक पाठ में ग्रामीण जीवन खेती, आर्थिक कठिनाइयों और शिक्षा के लिए संघर्ष के माध्यम से सामने आता है।
- ग्रामीण समाज के विरोधी पक्षों को साथ देखना आवश्यक है: संकीर्ण सोच शिक्षा रोकती है, जबकि सहयोगी व्यक्ति और शिक्षक आगे बढ़ने में सहायता करते हैं।

चरण 1: कृषि और पारिवारिक श्रम का चित्र देखिए पाठ का ग्रामीण जीवन मुख्यतः खेती पर निर्भर है। खेत में पानी देना, पशु चराना और अन्य कृषि-कार्य परिवार की दिनचर्या का हिस्सा हैं। बच्चों को भी इन कामों में लगना पड़ता है। लेखक के पिता उसे पढ़ाने की अपेक्षा खेत में काम करवाना अधिक उपयोगी समझते हैं। माँ पर भी घर और श्रम का बोझ है। इस प्रकार जीवन में परिश्रम बहुत है, पर बच्चों की आकांक्षाओं के लिए पर्याप्त अवसर नहीं हैं।

चरण 2: शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट कीजिए लेखक पढ़ना चाहता है, किंतु पिता की सोच और काम का दबाव उसकी राह रोकते हैं। पढ़ाई को तत्काल आय न देने वाली गतिविधि मानने से बालक का भविष्य उपेक्षित होता है। स्कूल जाने की अनुमति मिलने पर भी उसे खेती के काम से छुटकारा नहीं मिलता। पाठ बताता है कि ग्रामीण बालक के लिए शिक्षा प्राप्त करना इच्छा के साथ निरंतर संघर्ष भी माँगता है।

चरण 3: सहयोग और संवेदना का पक्ष जोड़िए गाँव का जीवन केवल अभाव और कठोरता का चित्र नहीं है। दत्ता जी राव लेखक की पढ़ाई फिर शुरू कराने में सहायता करते हैं। विद्यालय में शिक्षकों का प्रोत्साहन उसकी प्रतिभा को विकसित करता है और कविता के प्रति रुचि जगाता है। इस सहयोग से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण समाज में रूढ़ियों के साथ संवेदना, मार्गदर्शन और परिवर्तन की संभावनाएँ भी मौजूद हैं।

चरण 4: निष्कर्ष 'जूझ' में ग्रामीण जीवन कृषिप्रधान, श्रमसाध्य और आर्थिक-सामाजिक कठिनाइयों से घिरा है। शिक्षा के प्रति संकीर्णता उसमें बाधा बनती है, किंतु सहायक व्यक्तियों और शिक्षकों का सहयोग प्रतिभा को आगे बढ़ने का रास्ता देता है।

त्वरित सुझाव: ग्रामीण जीवन का वर्णन खेती, बालक पर श्रम का बोझ, शिक्षा की बाधा और दत्ता जी राव व शिक्षकों के सहयोग के क्रम में करें।

12(ग). 'डायरी के पन्ने' के आधार पर महिलाओं के बारे में ऐन फ्रैंक के विचारों पर प्रकाश डालिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन फ्रैंक स्त्री-पुरुष संबंधों को समानता, न्याय और स्त्री के योगदान के सम्मान की दृष्टि से देखती हैं।
- वे महिलाओं पर थोपे गए पराधीन स्थान का विरोध करती हैं और मातृत्व के कष्ट तथा सामाजिक महत्त्व को विशेष मान्यता देती हैं।

चरण 1: स्त्रियों की असमान स्थिति पर विचार स्पष्ट कीजिए ऐन को यह अनुचित लगता है कि समाज ने पुरुष को ऊँचा और स्त्री को नीचा स्थान दिया है। पुरुष की अधिक शारीरिक शक्ति अपने आप उसे शासन करने या स्त्री के अधिकार सीमित करने का अधिकार नहीं देती। ऐन के अनुसार स्त्रियों को बराबरी का सम्मान और स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। लंबे समय तक इस व्यवस्था को सामान्य मानकर स्वीकार करने के स्थान पर उसकी अन्यायपूर्ण प्रकृति को समझना आवश्यक है।

चरण 2: स्त्री के श्रम और मातृत्व का महत्त्व बताइए ऐन स्त्री के त्याग और विशेष रूप से संतान को जन्म देने में सहन की जाने वाली पीड़ा की ओर ध्यान दिलाती हैं। पुरुष के युद्ध-संबंधी साहस को समाज प्रतिष्ठा देता है, लेकिन स्त्री के मातृत्व और उसकी कठिनाइयों को वैसा सम्मान नहीं देता। उनके विचार में मानव-जीवन की निरंतरता में स्त्री की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है; उसे साधारण कर्तव्य मानकर उसकी पीड़ा और योगदान की उपेक्षा नहीं होनी चाहिए।

चरण 3: भविष्य की उनकी आशा समझिए ऐन चाहती हैं कि महिलाओं को शिक्षा, काम और सामाजिक जीवन में आगे बढ़ने के अवसर मिलें तथा उनके अधिकारों को स्वीकार किया जाए। वे आशा करती हैं कि भविष्य में स्त्री केवल दूसरों की दया पर निर्भर नहीं रहेगी, बल्कि समाज में अपना उचित स्थान पाएगी। उनका आग्रह स्त्री की गरिमा और क्षमताओं की मान्यता का है।

चरण 4: निष्कर्ष ऐन फ्रैंक महिलाओं की समानता, स्वतंत्रता और सम्मान की समर्थक हैं। वे पुरुष-प्रधान व्यवस्था पर प्रश्न उठाती हैं और चाहती हैं कि स्त्री के श्रम, मातृत्व तथा सामाजिक योगदान को उचित प्रतिष्ठा मिले।

त्वरित सुझाव: ऐन के विचार बताते समय समान अधिकार, शारीरिक शक्ति से श्रेष्ठता का विरोध और मातृत्व के सम्मान को अलग-अलग स्पष्ट करें।

13(क). निम्नलिखित में से किसी दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 'सिल्वर वैडिंग' के आधार पर 'जो हुआ होगा' वाक्यांश के विभिन्न अर्थों को स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'जो हुआ होगा' का प्रसंग किशनदा की मृत्यु से जुड़ा है; इसका अर्थ केवल मृत्यु के अज्ञात कारण तक सीमित नहीं है।
- यशोधर बाबू इस अनिश्चित उत्तर में वृद्धावस्था, अकेलेपन और अपने संभावित भविष्य की चिंता भी अनुभव करते हैं।

चरण 1: वाक्यांश का प्रत्यक्ष अर्थ समझिए किशनदा की मृत्यु कैसे हुई, इस प्रश्न का उत्तर 'जो हुआ होगा' मिलता है। इसका सीधा अर्थ है कि मृत्यु का ठीक-ठीक कारण मालूम नहीं; कोई बीमारी या वृद्धावस्था से जुड़ी स्थिति रही होगी। उत्तर देने वाला मृत्यु के कारण की खोज में नहीं जाता, इसलिए इस कथन में अनभिज्ञता के साथ उदासीनता का भाव भी सुनाई देता है।

चरण 2: यशोधर बाबू के लिए गहरे अर्थ बताइए यशोधर बाबू के लिए किशनदा मार्गदर्शक और आत्मीय थे। इसलिए वे इस उत्तर को सहजता से नहीं ले पाते। उन्हें इसमें अकेले पड़ जाने, अपनेपन और देखभाल से वंचित रहने तथा बदलते समय में अनुपयोगी मान लिए जाने की पीड़ा दिखाई देती है। उन्हें अपने बुढ़ापे की आशंका भी घेरती है कि कहीं वे भी किशनदा की तरह उपेक्षित न रह जाएँ।

चरण 3: निष्कर्ष 'जो हुआ होगा' एक ओर मृत्यु के कारण की अनिश्चितता व्यक्त करता है, दूसरी ओर वृद्ध व्यक्ति के अकेलेपन और उपेक्षा की ओर संकेत करता है। यशोधर बाबू के मन में यही कथन अपने भविष्य की चिंता बन जाता है।

त्वरित सुझाव: इस वाक्यांश का उत्तर किशनदा की मृत्यु के प्रसंग से शुरू करें और प्रत्यक्ष अनिश्चितता के बाद यशोधर बाबू की अकेलेपन की आशंका समझाएँ।

13(ख). 'सिंधु-सभ्यता साधन-संपन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था।' टिप्पणी कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'अतीत में दबे पाँव' में सिंधु-सभ्यता की समृद्धि का प्रमाण उसकी नगर-योजना और नागरिक सुविधाएँ हैं।
- समृद्धि और आडंबर अलग हैं: उपलब्ध साधनों का उपयोग व्यवस्थित जीवन के लिए करना, वैभव का दिखावा करना नहीं है।

चरण 1: साधन-संपन्नता के प्रमाण दीजिए सिंधु-सभ्यता में पकी ईंटों के मकान, सुव्यवस्थित सड़कें, ढकी हुई नालियाँ, कुएँ और स्नान की सुविधाएँ थीं। विशाल स्नानागार तथा विकसित जल-निकासी व्यवस्था निर्माण-कौशल और संसाधनों की उपलब्धता के प्रमाण हैं। नगर की योजना में स्वच्छता, सुविधा और सामूहिक जीवन का ध्यान रखा गया था।

चरण 2: आडंबर के अभाव का अर्थ स्पष्ट कीजिए इस सभ्यता में अन्य प्राचीन सभ्यताओं जैसे विराट राजमहलों, भव्य मंदिरों अथवा शासक की महिमा दिखाने वाले स्मारकों का वैसा प्रदर्शन नहीं मिलता। वस्तुओं और निर्माण में उपयोगिता, सुंदरता और सुघड़ता है, किंतु सत्ता या धन का चकाचौंध भरा दिखावा नहीं। इसका वैभव नागरिक व्यवस्था और जीवन की गुणवत्ता में दिखाई देता है।

चरण 3: निष्कर्ष सिंधु-सभ्यता साधन-संपन्न थी, क्योंकि उसकी नगर-योजना और सार्वजनिक सुविधाएँ विकसित थीं; उसमें आडंबर नहीं था, क्योंकि संसाधनों का प्रमुख परिचय सुव्यवस्थित नागरिक जीवन था, शासकीय वैभव का प्रदर्शन नहीं।

त्वरित सुझाव: टिप्पणी में नालियों, कुओं और नगर-योजना से समृद्धि सिद्ध करें तथा विराट महलों के प्रदर्शन के अभाव से सादगी स्पष्ट करें।

13(ग). दादा ने मन मारकर अपने बच्चे को स्कूल भेजने की बात मान तो ली, पर खेती-बाड़ी के बारे में उससे क्या-क्या वचन लिए? 'जूझ' के आधार पर उत्तर दीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव के आत्मकथात्मक पाठ 'जूझ' में बालक की पढ़ने की इच्छा और खेती में उससे श्रम कराने की दादा की अपेक्षा के बीच संघर्ष है।
- दादा की स्वीकृति सशर्त थी; स्कूल जाने पर भी बालक को खेती और पशुओं की देखभाल की जिम्मेदारी निभानी थी।

चरण 1: स्कूल के पहले और बाद की शर्तें स्पष्ट कीजिए दादा ने वचन लिया कि बालक सुबह स्कूल जाने से पहले खेत में पानी लगाएगा। स्कूल की छुट्टी होते ही वह सीधे खेत पर आएगा और ढोर चराएगा। इस प्रकार पढ़ाई के लिए मिलने वाला समय खेत का काम पूरा करने पर निर्भर था; स्कूल जाने को खेती से छुटकारा नहीं माना गया।

चरण 2: खेती को प्राथमिकता देने की शर्त बताइए दादा ने यह भी कहा कि जिस दिन खेत में काम अधिक होगा, उस दिन उसे स्कूल छोड़कर खेत में काम करना पड़ेगा। खेती के काम में कोताही नहीं होनी चाहिए। बालक ने पढ़ाई फिर शुरू करने की तीव्र इच्छा के कारण ये कठिन शर्तें स्वीकार कर लीं। इससे स्पष्ट है कि दादा ने पढ़ने की अनुमति तो दी, लेकिन खेती की जिम्मेदारी से उसे मुक्त नहीं किया।

चरण 3: निष्कर्ष बालक को सुबह खेत में पानी देने, छुट्टी के बाद सीधे खेत जाकर ढोर चराने और अधिक काम वाले दिन स्कूल न जाकर खेती करने के वचन देने पड़े।

त्वरित सुझाव: दादा की शर्तें तीन समयों में याद रखिए: स्कूल से पहले, छुट्टी के बाद और खेत में अधिक काम वाले दिन।

14. 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर पीढ़ियों के अंतराल के कारणों पर प्रकाश डालिए। क्या इस अंतराल को कुछ पाटा जा सकता है? कैसे? स्पष्ट कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी 'सिल्वर वैडिंग' में यशोधर बाबू और उनके परिवार की नई पीढ़ी के बीच जीवन-दृष्टि, रुचियों और मूल्यों का अंतर उभरता है।
- पीढ़ियों का अंतर केवल आयु का अंतर नहीं होता; बदलता सामाजिक परिवेश, शिक्षा, आर्थिक आकांक्षाएँ और संवाद की कमी भी उसे बढ़ाते हैं।

चरण 1: पुराने और नए जीवन-मूल्यों का अंतर समझाइए यशोधर बाबू सादगी, मर्यादा, अपनत्व और सामुदायिक संबंधों को महत्त्व देते हैं। किशनदा से मिले संस्कार उनकी जीवन-दृष्टि का आधार हैं। दूसरी ओर, उनके बच्चे आधुनिक सुविधाओं, अच्छी आय, नए पहनावे और उत्सव के नए ढंग को स्वाभाविक मानते हैं। बच्चे माता-पिता के विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ मनाना चाहते हैं, पर यशोधर बाबू को यह आयोजन और उसका ढंग सहज नहीं लगता। एक ही प्रसंग किसी के लिए स्नेह की अभिव्यक्ति और किसी के लिए अपरिचित दिखावा बन जाता है।

चरण 2: बदलते परिवेश और संवाद की कमी का प्रभाव बताइए नई पीढ़ी की शिक्षा, नौकरी और आर्थिक अवसर पुराने समय से अलग हैं। इसलिए सफलता, खर्च और जीवन-सुख के उसके मापदंड भी बदल गए हैं। यशोधर बाबू नए व्यवहार को अपने पुराने अनुभवों की कसौटी पर परखते हैं, जबकि बच्चे उनकी भावनाओं और संकोच को पूरी तरह नहीं समझते। उनकी पत्नी भी बच्चों के नए तौर-तरीकों को अपना रही हैं, जिससे उनका अकेलापन बढ़ता है। पुत्र द्वारा दिया गया ड्रेसिंग गाउन स्नेह का संकेत है, फिर भी यशोधर बाबू उसके साथ अधिक आत्मीय आग्रह की अपेक्षा करते हैं। इस प्रसंग में भौतिक उपहार और भावनात्मक निकटता का अंतर सामने आता है।

चरण 3: अंतराल पाटने के उपाय स्पष्ट कीजिए यह अंतराल संवेदनशील संवाद और परस्पर सम्मान से कम हो सकता है। बड़े बदलती परिस्थितियों और बच्चों की स्वतंत्र रुचियों को समझें तथा हर नई बात को अनुचित न मानें। बच्चे बुजुर्गों के अनुभव, संस्कार और भावनात्मक जरूरतों का सम्मान करें। पारिवारिक निर्णयों और उत्सवों में उन्हें सहभागी बनाना, उनके साथ समय बिताना तथा उपहार के साथ आत्मीय व्यवहार करना आवश्यक है। दोनों पीढ़ियाँ अपने मत को अंतिम सत्य मानने के स्थान पर दूसरे का दृष्टिकोण सुनें, तो मतभेद रिश्तों में दूरी का कारण नहीं बनेंगे।

चरण 4: निष्कर्ष कहानी में पीढ़ियों का अंतर बदलते जीवन-मूल्यों, आर्थिक-सामाजिक परिस्थितियों और अधूरे भावनात्मक संवाद से पैदा हुआ है। इसे पूरी तरह मिटाना आवश्यक नहीं, पर सहिष्णुता, सहभागिता और स्नेहपूर्ण संवाद से काफी हद तक पाटा जा सकता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में वर्षगाँठ के आयोजन और ड्रेसिंग गाउन के प्रसंग को जोड़िए; फिर हर कारण के सामने समझ, सहभागिता या आत्मीय संवाद का उपाय रखिए।

अथवा

14. अथवा "पुरातत्त्व के निष्प्राण चिह्नों के आधार पर युग-विशेष के आबाद घरों, लोगों और उनकी सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक गतिविधियों का पुख़्ता अनुमान किया जा सकता है।" 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर टिप्पणी कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ओम थानवी का पाठ 'अतीत में दबे पाँव' मोहनजोदड़ो के पुरातात्त्विक अवशेषों के माध्यम से सिंधु सभ्यता के जीवन और संस्कृति की पहचान कराता है।
- घरों, सड़कों, स्नानागारों, मुहरों और कलाकृतियों को परस्पर जोड़कर देखने से अतीत के जीवन का प्रमाणाधारित अनुमान संभव होता है; अनुमान को पूर्ण ऐतिहासिक निश्चितता नहीं मानना चाहिए।

चरण 1: नगर और घरों से सामाजिक जीवन पहचानिए मोहनजोदड़ो की व्यवस्थित सड़कें, गलियाँ, पकी ईंटों के घर, कुएँ और जल-निकासी की नालियाँ केवल खंडहर नहीं हैं। वे बताते हैं कि वहाँ लोग योजनाबद्ध नगर में रहते थे और स्वच्छता तथा जल-व्यवस्था को महत्त्व देते थे। घरों के आँगन, स्नान के स्थान और अलग-अलग कक्ष घरेलू जीवन की जरूरतों का संकेत देते हैं। सड़कों और नालियों की व्यवस्था से समझ आता है कि नागरिक सुविधाओं के लिए सामूहिक सोच और संगठन रहा होगा। इस प्रकार निर्जीव निर्माण तत्कालीन जीवन-व्यवस्था की जानकारी देते हैं।

चरण 2: वस्तुओं और कलाकृतियों से आजीविका तथा संस्कृति समझिए मिट्टी के बरतन, औजार, आभूषण, मुहरें और मूर्तियाँ शिल्प, कला तथा दैनिक उपयोग की वस्तुओं के निर्माण का प्रमाण हैं। नर्तकी की कांस्य मूर्ति धातु-कला और कलात्मक संवेदना की विकसित स्थिति का परिचय देती है। मुहरों तथा मानकीकृत बाटों जैसे अवशेष व्यापारिक गतिविधियों और विनिमय-व्यवस्था का संकेत करते हैं। इन प्रमाणों से ऐसे समाज की कल्पना बनती है जिसमें केवल जीवन-निर्वाह ही नहीं, सौंदर्यबोध, कुशल शिल्प और आर्थिक संपर्क भी महत्त्व रखते थे।

चरण 3: धार्मिक और राजनीतिक अनुमानों की सीमा बताइए विशाल स्नानागार सामूहिक स्नान की सुविचारित व्यवस्था दिखाता है; उससे अनुष्ठानिक उपयोग की संभावना भी जोड़ी जाती है। मुहरों पर अंकित आकृतियाँ धार्मिक विश्वासों के संकेत दे सकती हैं। फिर भी हर संकेत से निश्चित धार्मिक पद्धति सिद्ध नहीं हो जाती। इसी प्रकार सुव्यवस्थित नगर प्रशासनिक संगठन की ओर संकेत करता है, लेकिन उससे किसी विशिष्ट शासन-पद्धति का पक्का दावा करना उचित नहीं है। भव्य राजप्रासादों और विशाल मंदिरों की अपेक्षा नागरिक निर्माणों का प्रमुख होना पाठ में नागरिक संस्कृति के महत्त्व को उभारता है। लिपि पूरी तरह न पढ़े जा सकने से अनेक बातें अभी अनुमान के स्तर पर ही हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कथन सार्थक है: पुरातात्त्विक चिह्नों को साथ रखकर उस युग के घरों, सामाजिक जीवन, व्यवसाय, कला और सामुदायिक संगठन का ठोस अनुमान लगाया जा सकता है। 'अतीत में दबे पाँव' यह भी समझाता है कि विशेषकर धर्म और शासन के बारे में प्रमाण जितना कहें, निष्कर्ष उतना ही होना चाहिए।

त्वरित सुझाव: हर अनुमान के साथ उसका अवशेष जोड़िए: नालियों से स्वच्छता, बाटों से व्यापार, मूर्तियों से कला और नगर-योजना से सामूहिक संगठन।